RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 दिसम्बर 2020

बाल विज्ञान पत्रिका, दिसम्बर 2020

चकमक

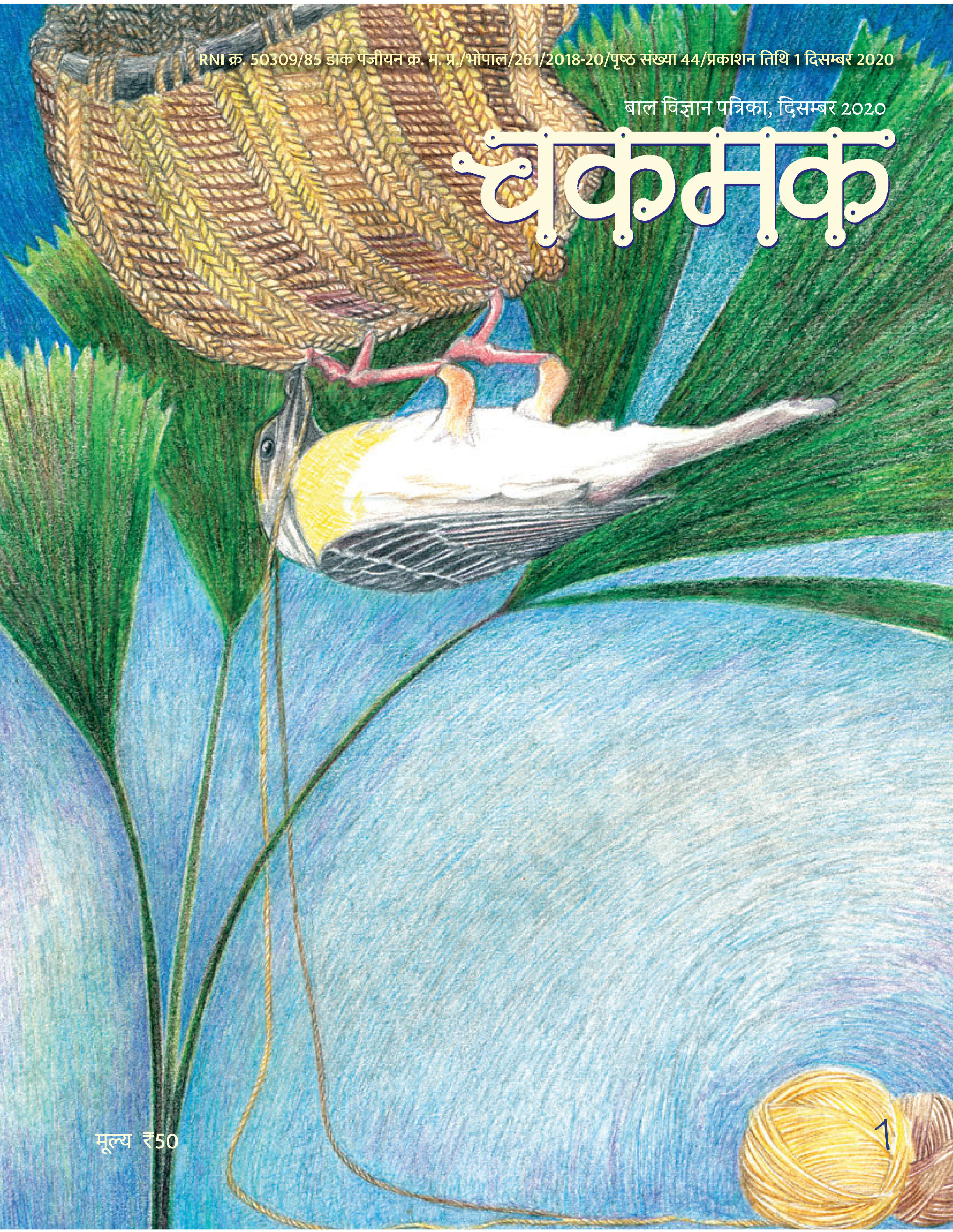

मूल्य ₹50

चित्रकार, डिज़ाइनर और लेखक दिलीप चिंचालकर नहीं रहे।

दिलीप चिंचालकर अप्रैल 2009 से अक्टूबर 2017 तक *चकमक* के डिज़ाइनर रहे। *चकमक* के पन्नों में डिज़ाइन का जो स्वरूप आज दिखता है उसमें दिलीप जी का उल्लेखनीय योगदान है। दिलीप जी ने *चकमक* को ना सिर्फ एक अलग, नया और सुन्दर जामा पहनाया, बल्कि *चकमक* पढ़ने का अनुभव और मज़ेदार बनाया। डिज़ाइन में उन्होंने अपनी बहुत ही सुन्दर लिखाई (कैलीग्राफी) का भी इस्तेमाल किया, जिससे नज़र हटाना मुश्किल होता है। साथ ही, जिस तरह से उन्होंने प्रकृति और जीव-जन्तुओं का चित्रण किया वह दिल को छू जाता है।

दिलीप जी सिर्फ डिज़ाइनर व चित्रकार ही नहीं थे, लेखक भी थे। दिलीप जी की लेखन शैली अन्य लेखकों से काफी जुदा थी। जिस तरह से वे शब्दों को बुनते, जिस सुन्दरता, इत्मिनान, सहजता और सरलता से वे अपनी बात रखते थे वह अनुपम था। दिलीप जी का प्रकृति से गहरा नाता था। उनकी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में प्रकृति के अलग-अलग रूप घुले हुए थे। आसपास के हरेक पेड़-पौधे, हरेक मौसम और हरेक जीव का उनको करीबी एहसास रहता था। अपने आसपास की दुनिया को इतनी बारीकी से देखना-समझना और इस आत्मविश्वास के साथ उसे व्यक्त करना सचमुच कमाल है। दिलीप जी ने अपनी चित्रकारी, डिज़ाइन और लेखन से बच्चों के साहित्य को सुन्दर बनाया।

दिलीप जी की कमी हमेशा महसूस होगी, पर अपनी कला और लेखनी के ज़रिए वे हमेशा हमारे साथ रहेंगे। *चकमक* के पाठकों के लिए जो अनमोल खज़ाना वह छोड़ गए हैं, उनमें से कुछ लेखों और चित्रों से हमने इस अंक को सजाने की कोशिश की है। साथ ही, उनके साथियों की उनसे जुड़ी कुछ यादें भी इस अंक में प्रस्तुत हैं।

चकमक का यह अंक दिलीप जी के नाम।

चित्र: दिलीप चिंचालकर

अलविदा, दिलीप जी!

अंक 411 ● दिसम्बर 2020

चकमक

इस बार

मेरा दोस्त दिलीप चिंचालकर – अतनु राय – 4
एक चित्रकार – तापोशी घोषाल – 5
लव यू दिलीप सर – 6
मेरे बगीचे का पीर नीम बाबा – दिलीप चिंचालकर – 10

क्यों-क्यों – 12
तालाबन्दी में बचपन – लॉकडाउन में नानी – तनिष्का – 14
तुम भी जानो – 19
एक पत्ते का जीवन – नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउंडेशन – 20
बड़ों का बचपन – बचपन कुछ... – प्रोइति रॉय – 22
भूलभुलैया – 24
छोटा धागा – नेहा बहुगुणा – 25
सारा और ज़ारा – मंजरी शुक्ला – 26

मेरा पन्ना – 28
एक ही हाण्डी के चटपटे... – दिलीप चिंचालकर – 34
99.9 प्रतिशत मार दिए... – सुशील जोशी – 36
अन्तर ढूँढ़ो – 37
माथापच्ची – 38
चित्रपहेली – 40
ग्रे स्लेन्डर लोरिस – रोहन चक्रवर्ती – 43

चित्र : दिलीप चिंचालकर

आवरण चित्र : दिलीप चिंचालकर

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी
सजिता नायर

सहायक सम्पादक
मुदित श्रीवास्तव

डिज़ाइन
कनक शशि

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

चित्र: दिलीप चिंचालकर

मेरा दोस्त
दिलीप चिंचालकर

अतनु राय

चित्र: तापोशी घोषाल

मैं उसूलन ऐसे लोगों से दोस्ती करता हूँ जिनके पास ऐसा कोई हुनर हो जो मुझमें नहीं है। ऐसी दोस्ती में बारीक-सी ईर्ष्या होती है जो आश्चर्यजनक रूप से दोस्ती को प्रगाढ़ बनाती है! इस तरह, अचानक ही एक दिन दिलीप आते हैं और अपने शर्मीले व शान्त स्वभाव और बहुमुखी प्रतिभा से आप पर सहज ही छा जाते हैं...

दिलीप के साथ मेरी मुलाकात तब हुई जब होशंगाबाद में रियाज़ के पहले सत्र की शुरुआत हो रही थी। मैंने उनको बरामदे में थोड़ा उदास और गुमसुम बैठे देखा और क्लास में आने को कहा। मुझे ऐसा लगता है कि इस वजह से वे मेरे प्रति शुक्रगुज़ार हुए और हम लोग दोस्त बन गए...

वे गज़ब के किस्सागो थे। उनके यात्रा संस्मरण वाकई अद्‌भुत थे। वे आपको उन महाद्वीपों में ले जाते हैं जहाँ वे गए। और इन रोमांचक यात्राओं में उन्होंने जो किस्म-किस्म के हुनर सीखें वह तो हैरतअंगेज़ है। वे एक ऐसे व्यक्ति थे जो किसी क्षेत्र में सीखने के लिए आतुर विद्यार्थी की तरह कदम रखता है और जल्द ही उस माध्यम की तमाम शैलियों, विषयवस्तु और तकनीक में माहिर हो जाता है।

जब उन्होंने *चकमक* को डिज़ाइन करना शुरू किया तो डिज़ाइनिंग व चित्रांकन में उनका हुनर साफ झलकता था। कंपोज़िशन की समझ और छपाई तकनीक का उनका ज्ञान एकदम पक्का था। प्रकृति, पेड़-पौधों व जीव-जन्तुओं के प्रति उनमें अगाध प्रेम था। हमेशा नई-नई चीज़ें खोजते रहना, हर स्थिति के लिए तैयार रहना और शायद ही कभी किसी चीज़ की शिकायत करना – एक सम्पूर्ण मनुष्य में इससे ज़्यादा क्या हो सकता है?

एक प्रख्यात पिता की विरासत को सहेजते हुए जिस तरह से दिलीप ने नई उपलब्धियाँ हासिल कीं उससे उन दोनों के बीच के गहरे जुड़ाव की झलक भी देखने को मिलती है।

नई मंज़िलों की तलाश में अपनी नई दुनिया में सधी चाल चलते दिलीप के मुस्कराते चेहरे को मैं देख सकता हूँ। और मुझे यकीन है कि वह रह-रहकर पीछे मुड़ हमें देखते हैं और दुआएँ देते हैं।

अनुवाद: लोकेश मालती प्रकाश

एक चित्रकार

तापोशी घोषाल

दिलीप जी नहीं रहे, ये बात जानते हुए भी मानना कठिन लग रहा है। हमारी जान-पहचान केवल तीन-चार साल पुरानी है, पर लगता है जैसे हम सालों से एक-दूसरे को जानते हैं। किसी व्यक्ति के सरल होने की यही एक पहचान है।

रियाज़ चित्रकला अकादमी की एक मीटिंग में पहली बार मैं उनसे मिली। जब भी मुलाकात होती दिलीप जी हर बार मुझे एक नई वेशभूषा में मिलते। कभी एक कॉमरेड की तरह, कभी एक चित्रकार के रूप में, तो कभी पड़ोस के घर के एक अति साधारण टोपी पहने पहाड़ी व्यक्ति के वेश में। बड़ा ही आनन्द देता था ये सब। ठीक ऐसे ही थे उनके बनाए चित्र या उनके लिखे लेख।

दिलीप जी ने *चकमक* को भी कई वर्षों तक डिज़ाइन किया। उनके सभी सादगी भरे डिज़ाइनों को मैं बार-बार उलट-पलटकर देखा करती थी। आखिर क्या बात थी जो वह डिज़ाइन इतने खास दिखते थे। क्या वह उनके हाथों से खिंचीं लकीरें थीं या उनकी बेहद खूबसूरत लिखावट जिसे मैं घण्टों तक निहार सकती हूँ। कहीं-कहीं उनके हाथों से खिंचीं कुछ आज़ाद लकीरें, उनकी एक अनकही कभी न मिटने वाली छाप छोड़ती हैं।

चित्र: दिलीप चिंचालकर

लव यू दिलीप सर

दिलीप जी के साथ मेरी पहली और आखिरी मुलाकात मुझे भूलती ही नहीं। रियाज़ के कुछ अन्तिम सेशंस में से एक दिन की बात है। उस दिन दिलीप जी हमें किताबें बनाने के बारे में कुछ क्लासेज देने होशंगाबाद आए थे। उनकी शानदार पगड़ी में नीले और नारंगी रंग ऐसे झूम रहे थे कि मानो दिलीप जी खुद किंगफिशर पंछियों से एक दिन के लिए उनके रंग उधार ले आए हों, अपनी पगड़ी में सजाने के लिए। वह पेशे से एक बायोकेमिस्ट रह चुके थे और अब पढ़ने-पढ़ाने, डिज़ाइन व चित्रकारी के तमाम क्षेत्रों में दिलचस्पी रखते थे। उनके बारे में जानकर मुझे ऐसा लगा कि जिस तरह उनकी पगड़ी के रंग उस पगड़ी में कैद नहीं हो पा रहे थे, उसी तरह जीवन के प्रति दिलीप जी के उत्साह का कोई शेष नहीं था। उन्होंने हमें अपनी किताब *आज भी खरे हैं तालाब* के चित्र भी दिखाए। राजस्थान का आभास देने के लिए उन्होंने इन चित्रों को रेतीले किस्म का बनाया था। वे चित्र और दिलीप जी की आज़ाद सोच की चमक मेरे ज़ेहन में हमेशा ताज़ा रहेगी।

अबीरा बन्धोपाध्याय

चित्र: अबीरा बन्धोपाध्याय

रियाज़ चित्रकला अकादमी स्थापित की गई ताकि भारत में बाल साहित्य के लिए चित्रकारी करने में रुचि रखने वालों को पनपने का मौका मिले। इसे पराग इनिशिएटिव ऑफ टाटा ट्रस्ट, एकलव्य फाउंडेशन और अतनु राय ने मिलकर 2015 में शुरू किया। दिलीप चिंचालकर रियाज़ के उस्तादों में से एक थे। कुछ समय के लिए वह इसके समन्वयक भी रहे। रियाज़ के उनके शागिर्दों ने उनसे जुड़ी अपनी कुछ यादें यहाँ साझा की हैं...

नाश्ता गरम रहता और नज़रें घड़ी पर जमी रहतीं। फिर भी पाँच मिनट की देरी हो ही जाती। तब तक दिलीप सर क्लास में पहुँच जाते। अपना बैग रखकर लैपटॉप सैट करने में लगे रहते। दरवाज़े पर खड़े होते ही उनकी एक नज़र हम पर होती और दूसरी घड़ी पर। फिर वे बस दो ही शब्द कहते, "ठीक है"।

सर की ऐसी कई बातें हैं जो हमेशा साथ रहेंगी। वे हमेशा रंग-बिरंगी टोपी पहनते, उस पर गौरैया रहती। कभी लाल रंग का बण्डाना बाँधते जो सफेद रंग की शर्ट पर खिल उठता। फोन के हैडफोन रखने के लिए उनके पास बहुत सुन्दर पाउच था। मेरी नज़रें हमेशा यह सारा चित्र देखती रहतीं।

मेरे सबसे ज़्यादा करीब था उनका हस्ताक्षर। बहुत दिल से लिखते थे वह और उनके होने का एहसास उन अक्षरों में बहुत खूबी से उतरता था। गौरैया और अपने घर के आँगन के बारे में बोलते हुए वह थकते नहीं थे। मुझे याद है जब मैंने उन्हें कहा था कि मुझे अमलतास बहुत अच्छा लगता है। तब अगली ही क्लास में उन्होंने मुझे अपने घर के बगल में खिले हुए अमलतास की फोटो दिखाई और कहा कि तुमने कहा था ना तुम्हें पसन्द है।

आज सर नहीं हैं। मगर ऐसी कई सारी छोटी-छोटी बातों के ज़रिए वह याद रहेंगे, साथ रहेंगे। गौरैया, अमलतास, हस्ताक्षर और इन्दौर की मिठाइयों की मिठास दिलीप सर की याद दिलाते रहेंगे।

शुभांगी

चित्र: दिलीप चिंचालकर

दिलीप जी बहुत ही मज़बूत इरादों वाले व्यक्ति थे। अभी तक मैं जितने भी दिलेर लोगों से मिली हूँ दिलीप जी उनमें से एक हैं। उन्होंने जीवन में कई तरह के काम किए और जिस तरह से उन्होंने अपनी क्षमताओं का पता लगाया मैंने कभी उसकी कल्पना भी नहीं की थी। अगर मैं खुद को उस तरह विकसित कर पाऊँ जैसे दिलीप जी ने किया था तो यह मेरी खुशकिस्मती होगी।

उन्होंने जो भी सीखा था उसे हमारे साथ साझा करने के लिए वे हमेशा उत्सुक रहते। उनका मानना था कि सीखना चीज़ों को केवल एक तरीके से करने तक सीमित नहीं है। वे बहुतेरी सम्भावनाओं में यकीन करते थे और इस तरह से सोचने के लिए हमें प्रेरित करते थे, कभी-कभी चुनौती भी देते थे। यह एक ऐसा महत्वपूर्ण सबक है जिसके लिए मैं उनकी शुक्रगुज़ार हूँ। चित्रकारी के बारे में मेरी समझ काफी हद तक शिक्षण के उनके अपरम्परागत तरीकों की देन है।

वे अपनी कला को जीते थे। बहुत ही प्यार, संवेदनशीलता, छोटे-छोटे विवरणों और गम्भीरता के साथ वे अपने चित्र बनाते थे। रियाज़ परिवार के हम सभी लोग उन्हें मिस करेंगे।

चित्र: मयूख घोष

निहारिका

चित्र: दिलीप चिंचालकर

मुझे तो वह बहुत ही खूबसूरत इन्सान लगे। मैं एक वर्ष उनके साथ रहा, यह मेरा सौभाग्य है। बहुत से विषयों पर उनकी अच्छी और गहरी पकड़ थी। भले ही वह नीम की पत्तियों और गोबर से बनी खाद ही क्यों ना हो। परफेक्शन उनका सतत प्रयास था और हमारा एकाग्र हो जाना परिणाम। खाने की टेबल पर हो, या चाय के दौरान या फिर किसी भी मौके पर जब उनसे बातचीत होती तो वे अपनी मुस्कान बिखेरते अपने खज़ाने (अनुभवों) को हमसे साझा करते। हमें उलझाए रखते।

कक्षा में किसी विषय पर उनका सेशन होता तो मैं तो अपनी कमर कस लेता था। डीटेल्स इतनी ज़ोरदार होती थीं कि क्या कहूँ। और आप तक वह कितने असरदार तरीके से पहुँचे कि आप विषय में खो जाएँ यह करना दिलीप सर बखूबी जानते थे। वह जब भी हमसे बात करते थे तो हम मंत्रमुग्ध हो जाते थे। कम से कम मैं तो। और यही जादुई ज़ुबान कलम बनकर उनके लेखन में भी दिखती थी। उनके चित्रों से ज़्यादा मुझे उनका लेखन अच्छा लगता था। सच में वह बहुत ही उम्दा और दिलचस्प लिखते थे, साथ ही खूबसूरत भी। और क्या कहूँ, लव यू सो मच दिलीप सर।

प्रशान्त सोनी

चित्र: दिलीप चिंचालकर

मेरे बगीचे का पीर नीम बाबा

दिलीप चिंचालकर

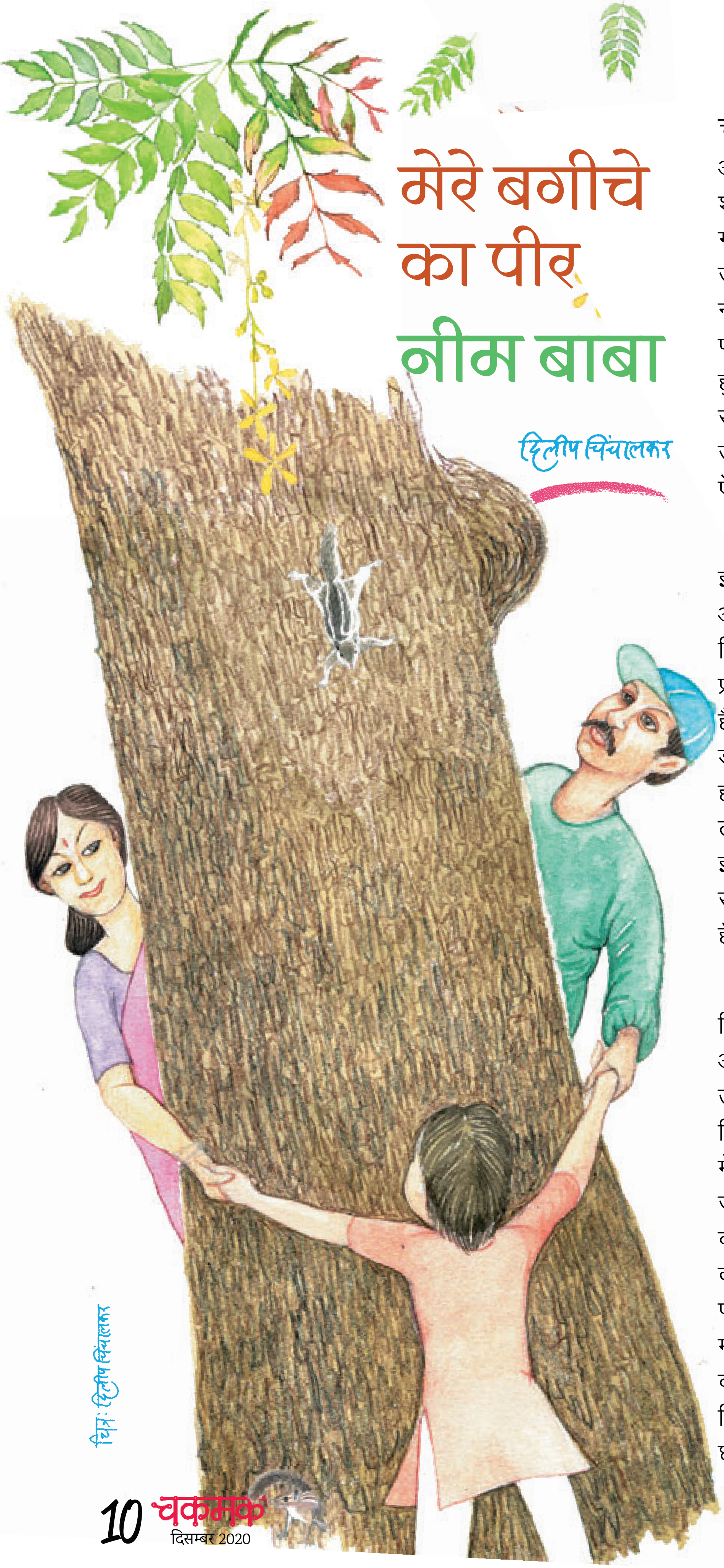

चित्र: दिलीप चिंचालकर

चैत का महीना है और भोर के पहले का अँधेरा है। मेरे बगीचे में रहने वाली बुलबुल और श्यामा ने अभी चहकना शुरू नहीं किया है। दिन गर्म होने लगे हैं लेकिन अभी हवा में ठण्डक है। उसी का आनन्द लेने के लिए सुबह की मीठी नींद छोड़कर बगिया में आ बैठा हूँ। घनी शान्ति पसरी हुई है। रात का जादू अभी खतम नहीं हुआ है। मैं नीम के फूलों को झरते हुए सुन सकता हूँ। बड़े महीन फूल हैं और वैसी ही उनकी महक और पत्तों पर गिरने की आहट है। ऐसे में चुपचाप बैठना मेरी सुबह की प्रार्थना है।

नीम का पेड़। यह हर मौसम का पेड़ है। इसलिए नहीं कि मैं इसे हर मौसम में घर के अहाते में खड़ा देख सकता हूँ। बल्कि इसलिए कि साल के हर दिन बगीचे में रहने वाले हम प्राणियों के लिए यह कुछ न कुछ लिए होता है। अभी इसकी हर पतली टहनी की हर छोटी डण्डी की हर बारीक काड़ी पर ताम्बई रंग से हरी होती पत्तियाँ हैं और हल्के सफेद फूलों की लड़ियाँ हैं। कभी देखे हैं नीम के फूल? दादी इनसे मीठा शर्बत बनाती थीं, ताऊजी डण्ठलों से दातून करते थे, मैं कड़वी पत्तियों को चबाता हूँ। अपना-अपना स्वभाव है।

घर बनाने के लिए ज़मीन का यह टुकड़ा पिताजी ने इस नीम की साझेदारी में लिया था। आपसी समझ थी कि इधर नीचे हम रहेंगे। उधर ऊपर तुम अपने कुनबे यानी झिंगुर, गिलहरियों, गिरगिट वगैरह के साथ बने रहना। घर की नींव में ईंट-पत्थर डालते समय पिताजी ने नीम की जड़ों को बचाए रखा। बदले में नीम ने घर की कबेलू वाली छत पर बाँहें फैलाकर छाया कर दी। जब जेठ-बैसाख में धूप तेज़ होती है तो नीम पत्तियों का घना मण्डप तान देता है और पूस-माघ के जाड़े में सारी पत्तियाँ उतारकर आँगन को धूप से भर देता है। दोनों ही मौसम में पिताजी अपना काफी समय नीम तले इस धूप-छाँव में ही बिताते थे... और अब मैं भी।

बारिश के दिनों में जब अचानक तेज़ बौछार शुरू होती है तो नीम का शामियाना उसे कुछ देर तक ऊपर ही रोके रखता है। हमें भाग-दौड़कर नीचे फैली चीज़ें हटाने के लिए कुछ समय मिल जाता है। लेकिन बारिश थम जाने के बाद भी आते-जाते हम पर बूँदें छींटता रहता है। मेरी बिटिया बचपन में यही समझती थी कि सारी बारिश हमारे नीम के पेड़ में से ही होती है। हवा भी नीम की पत्तियाँ हिलने से चलती है। स्कूल में उसके सहपाठी उसका मज़ाक बनाते।

एक गर्मियों की बात है। ढलती दुपहरी थी और तोते किलकारियाँ भरते हुए कच्ची निम्बोलियाँ टपाटप गिरा रहे थे। पेड़ के नीचे खटिया पर पसरा मैं ऊपर देख रहा था। इस कोण से हम पेड़ के भीतर कम ही झाँकते हैं। मुझे अचानक नीम का वह रूप दिखाई दिया जैसा शायद कभी अर्जुन को कृष्ण का दिखाई दिया होगा – विश्वरूप। तने से फुनगी तक ज़मीन से आसमान तक फैला नीम। बड़ी-छोटी शाखाएँ, टहनियाँ, पत्तियाँ। उनमें समाई उसके कीड़े-मकौड़ों-तितलियों-मधुमक्खियों-पक्षियों की दुनिया जो उसके सामने ज़मीन पर चित गिरने से मुझे दिखी।

हमारा नीम एक काकम्बीर है। यानी ऐसा पेड़ जिस पर कौवे घोंसला बनाते हैं। जहाँ कौवे का घोंसला हो वहाँ अण्डे देने के मौसम में कोयल का आना-जाना भी होता है। इसकी पत्तियों में छुपे बैठे नर या मादा कोयल और महोका महल्ले के दूसरे किसी पेड़ पर बैठे अपने साथी से लगातार कुहककर बातचीत का चक्कर चलाते हैं। कभी-कभी धनेष आकर सबसे ऊपर वाली शाख पर बैठ जाते हैं। तब मैना और सात भाई (बैबलर) जैसे छुटभैये खूब शोर मचाते हैं। गिलहरियाँ भी चीख-चीखकर पेड़ पर अपना कब्ज़ा जताती हैं। यह जानना दिलचस्प होगा कि नीम को कौन-से प्राणी प्रिय हैं – ये शोर-शराबी, बरतन पर हथौड़ी की ठुक-ठुक की आवाज़ करने वाला ठठेरा (बार्बेट) या गूँगी फाख्ता?

मेरे परिवार का बुज़ुर्ग यह नीम पता नहीं यहाँ कब से है! शायद दो सौ वर्षों से। इसके तने का घेरा नापने के लिए मेरी बेटी, उसकी माँ और मुझे, तीनों को हाथ पकड़कर इससे लिपटना पड़ता है। यह कल्पना मुझे रोमांचित करती है कि जुलाई 1857 के गदर में जब शहर का गोरा शासक कर्नल डूरेण्ड अपने लवाज़मे के साथ भागा तब हमारे नीम ने उसकी फज़ीहत देखी थी।

एक बार इसकी छाल को दीमक लग गई। मुझे चिन्ता हुई। मैं उसे रोज़ खुरचता मगर वह रात भर में ऊपर चढ़ जाती। फिर ध्यान आया कि उसके जीवन में कई बार दीमक ने हमला किया होगा और हर बार पेड़ ने उसे झटकार दिया होगा। इस बार भी ऐसा ही हुआ। नीम ने कई पतझड़ देखे थे। इसके तले मनो-मन पत्तियों की खाद बनी थी। परन्तु अब हम इसकी वर्षगाँठ का उत्सव मनाते हैं।

पतझड़ में झरने वाली हरी-पीली पत्तियों को बुहारकर पेड़ के गिर्द जमाते जाते हैं। कुछ ही दिनों में पत्तियों का गलीचा मोटा गद्दा बन जाता है। पहले इसका रंग पीला, फिर भूरा और कत्थई हो जाता है। पहले जो नर्म था कुरकुरा हो जाता है। कलाकार तबियत वाले मित्र इस कलाकृति पर चाय-गपशप के लिए आते हैं। पड़ोस के बच्चे इसमें खेलते हैं। मेरी दुम वाली अल्सेशियन बेटियाँ इसमें लोट लगाती हैं। सात भाई तो सारा दिन कीड़ों की खोज में पत्तियाँ खँगालती रहती हैं। कुछ निरीह सरिसृप भी इसमें दुबकने का सुख पा लेते हैं। कुछ हफ्तों तक पतझर और मौसमी फूलों की बहार, दोनों साथ-साथ बगीचे को सँवारते हैं।

बसन्त की शुरुआत में इन चुनी हुई पत्तियों से बनती है पौष्टिक खाद। इसमें गोबर के अलावा महक के लिए फलों के छिलके भी मिलाता हूँ। गर्मी के अन्त तक इस खाद की पहली खेप तैयार हो जाती है। काली, दानेदार और भीनी-भीनी महक वाली। मन करता है कि इसके साथ रोटी खा लें। घर के ताज़ा अचार के साथ चीनी की बरनियों में यह खाद फूल-गमलों के शौकीन पड़ोसियों के पास पहुँचती है तो वे चकित रह जाते हैं। फिर कौतुक भरी निगाहों से हमारे बगीचे में खड़े नीम बाबा को निहारते हैं।

क्यों क्यों

गोल चीज़ों का सर्पोट नहीं होता। इसलिए वह लुढ़क जाती हैं।

रितु, पाँचवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउण्डेशन, दिल्ली

चित्र: तनु, पाँचवीं, प्रोत्साहन इंडिया, फाउंडेशन, दिल्ली

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—

गोल चीज़ें लुढ़कती क्यों हैं?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

अगली बार के लिए सवाल है —

क्या देवों-राक्षसों की कहानियाँ सच्ची हैं या नहीं, और तुम्हें ऐसा क्यों लगता है?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

जिसका नाम ही गोल हो, वह चीज़ गोल-गोल नहीं घूमेगी?

अनुभव चमोली, पाँचवीं, केन्द्रीय विद्यालय, पौड़ी, उत्तराखण्ड

मैं हूँ अनोखा, मैं हूँ मस्त
मेरा नाम है गोल
लुढ़कता रहता हर जगह
नहीं ठहरता मैं पानी की तरह
नहीं पसन्द मुझे बैठना
वर्ग, आयत, त्रिभुज की तरह नहीं मुझे बनना
अलग रूप मेरा, एक जगह नहीं बैठना
चाहता हूँ मैं दुनिया घूमना
इसलिए तुम पाओगे मुझे हमेशा लुढ़कते हुए

तिशा, तीसरी, द हेरिटेज स्कूल, वसन्त कुंज, दिल्ली

क्योंकि उनकी गोल आकृति होती है और गोल चीज़ों में कोई कोण नहीं होता है। किसी गोल चीज़ में रबड़ लगाया जाता है तो वो लुढ़कती भी है और टप्पा भी खाती है। अगर हम कपड़े की गेंद बनाएँ तो वो ना लुढ़कती है, ना टप्पा खाती है।

प्रतिक्षा, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराकाशी, उत्तराखण्ड

अब बेचारा कोई-सा भी गोल शेप हो उसको क्या पता कि उसको लुढ़कना है। और कोई नहीं चाहता कि वो लुढ़के। तो हम पुलिस को बोलकर हरेक पत्थर के लुढ़कने पर जुर्माना लगा देते।

गीत रेकवाल, चौथी, देवास, मध्य प्रदेश

कोई चीज़ गोल रहती है तो वह लुढ़कती है। किसी चीज़ में घल (टकरा) जाती है तो रुक नहीं पाती, हिरा (गुम हो) जाती है। जब कंचा खेलते हैं तो वह भी लुढ़कता है। मेरे आँगन में अमरूद का पेड़ है। एक दिन अमरूद गिरा और लुढ़ककर नाली के पास पहुँच गया क्योंकि वह भी गोल है।

रीना यादव, पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक विद्यालय बडतूमा, सागर, मध्य प्रदेश

क्योंकि उनमें घर्षण कम होता है। जो चीज़ जितनी गोल या घर्षण रहित होगी वह उतना ज़्यादा लुढ़केगी। यही कारण है कि गाड़ियों के पहिए गोल बनाए जाते हैं। जिसके कारण वे कम घर्षण में अधिक दूर तक जाते हैं। वे सभी चीज़ें गोल या चिकनाई युक्त बनाई जाती हैं जिन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान स्थानान्तरित करना होता है या उनके द्वारा स्थानान्तरित किया जाता है।

प्रतिक्षा, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराकाशी, उत्तराखण्ड

गोल चीज़ें इसलिए लुढ़कती हैं क्योंकि वो नीचे से गोल होती हैं। उनकी चार भुजा नहीं होती इसलिए लुढ़कती हैं।

राहुल नेगी, पाँचवीं, एसडीएमसी स्कूल, हॉज़ खास, दिल्ली

क्योंकि गोल चीज़ों का ना कोई कोना होता है, ना छोर जो उन्हें लुढ़कने से रोके।

अनाया डोगरा, तीसरी, द हेरिटेज स्कूल, वसन्त कुंज, दिल्ली

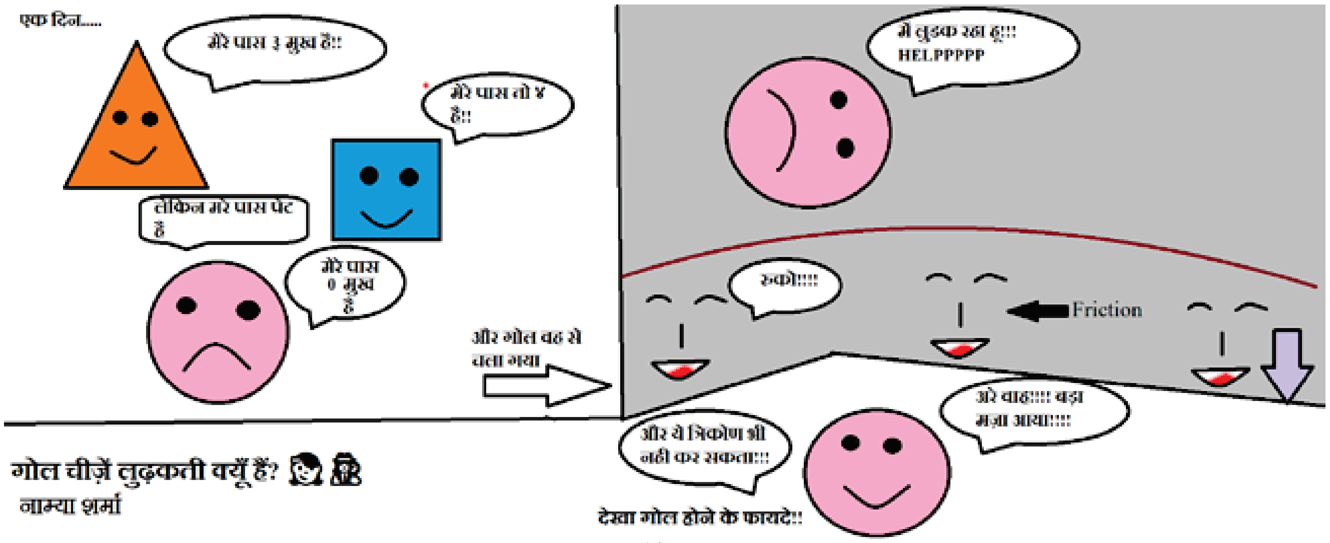

चित्र: नाम्या शर्मा

तनिष्का
चित्र: शुभम लखेरा

लॉकडाउन में नानी

तालाबन्दी में बचपन

यह एक नया कॉलम है जिसमें हर बार दिल्ली की अंकुर संस्था से जुड़े किसी बच्चे का संस्मरण होगा।

सरकार ने भले ही लॉकडाउन हटा दिया है लेकिन कोरोना के चलते बच्चों की ज़िन्दगियाँ तो अभी भी लॉकडाउन में हैं। कई सारे बच्चे अपने-अपने घरों-मोहल्लों में कैद हैं। स्कूल कब खुलेंगे यह भी पता नहीं। यह कॉलम ये जानने का एक ज़रिया है कि इस दौर में ये बच्चे क्या सोच रहे हैं, क्या कर रहे हैं...

होली के तीन दिन बाद आज घर में फिर से थोड़ी रौनक आई है। घर भी पूरा चमचमा रहा है। इस नए घर को और नया बनाया जा रहा है। सफाई खतम ही हुई थी कि दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी। दरवाज़ा खोला तो मेरे चेहरे पर एक बड़ी-सी मुस्कराहट आ गई, जिसे देख मम्मी समझ गईं कि वे लोग आ गए! दरवाज़े के सामने मामा एक बड़ा बैग लिए खड़े थे। मामी की गोद में था मेरा छोटा भाई जो शायद अभी एक साल का भी नहीं था। साथ ही नानी और बड़ी मामी की तीन बेटियाँ भी थीं। सब लोग अन्दर आए। मम्मी ने गैस ऑन की और चाय बनने को रख दी। मैंने सबको पानी दिया और बातों में लग गई।

हाथ में ट्रे लेकर चाय रखी ही थी कि मेरे छोटे भाई ने

मामा की चाय के गिलास में हाथ मारकर चाय गिरा दी। सभी हँसने लगे। मामा भी गुस्सा न कर चेहरे पर मुस्कान ले आए। मम्मी लिस्ट बनाने में मगन हो गईं। मामा, भाई और दीदी तीनों हवन का सामान लेने निकल पड़े।

शाम हो चुकी थी, खाना बनाने के लिए पानी की ज़रूरत थी। नया-नया घर था तो पानी का सिस्टम अभी नहीं था। इसीलिए पड़ोसियों ने मदद कर दी। अब खाना खाने के बाद सोने की तैयारी हो रही थी। कोई बेड पर, कोई फोल्डिंग पलंग पर, तो कोई ज़मीन पर अपनी थकान मिटा रहा था।

सुबह चार बजे नानी ने सबको जगाया। सुबह से ही सब घर के कामों में व्यस्त हो गए। घर में पोछा होते ही मम्मी ने अन्दर बुलाकर कहा, "चलो अब नहाकर जल्दी से तैयार हो जाओ। पण्डितजी आते ही होंगे।" एक-एक करके सब तैयार होने लगे। सबने नए कपड़े पहने। सब एक-दूसरे के कपड़ों की तारीफ करने लगे। अब बाकी सब भी आ चुके थे। पण्डितजी भी आ गए। पूजा शुरू हुई। देखते-देखते मेरी कब आँख लगी पता ही नहीं चला। नींद टूटी तो देखा जयकारे लग रहे थे।

रात को जब मामी को बैग में कपड़े रखते हुए देखा तो पूछे बगैर रहा न गया, "मामी कहीं जा रहे हो क्या?" मामी ने कहा, "हाँ, कल हम वापिस आगरा जा रहे हैं।" सुनकर चेहरा थोड़ा उदास हो गया। फिर मामी ने कहा, "हम जा रहे हैं, लेकिन तुम्हारी नानी अभी नहीं जा रही हैं।" यह सुनकर थोड़ा अच्छा लगा।

रात को खाना खाकर सब जल्दी ही सो गए। सुबह जब आँख खुली तो सब जाने के लिए तैयार हो रहे थे। जिस ऑटो को मम्मी ने बुक किया था वह भी आ गया। सब नीचे उतर आए। मामा-मामी को रवाना करते हुए नानी का चेहरा थोड़ा उदास हो गया।

नानी को हमारे साथ रहते हुए एक हफ्ता बीत चुका था। एक दिन सुबह आठ बजे जब नानी दूध लेने गईं तो चाय की दुकान पर बैठे कुछ लोग बार-बार कोरोना का नाम ले रहे थे। नानी सोच रही थीं कि आखिर यह कोरोना है क्या? तभी उनमें से एक ने कहा, "अब तो पूरा भारत बन्द हो जाएगा। विदेश में तो कोरोना बहुत फैल चुका है।"

नानी जब घर आईं तो मम्मी ने पूछा, "कहाँ रह गई थीं? वहीं चाय बनाने लगी थीं क्या?" इतना कहते ही मम्मी ने हाथ से दूध की थैली ली और चाय गैस पर रख दी। मम्मी बोलीं, "टीवी ऑन कर दे और न्यूज़ लगा दे।" टीवी चालू करने के लिए मैंने पैर बढ़ाया ही था कि नानी ने मम्मी से बोला, "अब वापिस आगरा जाने का मन कर रहा है। बहुत दिन हो गए यहाँ पर। सोचती हूँ कल वापिस आगरा चली जाऊँ।" मम्मी ने भी नानी की हाँ में हाँ मिलाई और अपने काम में लग गईं।

न्यूज़ लगाते ही एक ऐसी खबर सुनी जिसे सुन मैं तो बहुत खुश हुई। पर नानी के सर पर तो जैसे पहाड़ टूट पड़ा हो क्योंकि न्यूज़ में दिखाया जा रहा था कि आज से पूरा भारत बन्द रहेगा। स्कूल, कॉलेज, ट्रेन, मेट्रो सब बन्द, यहाँ तक की सारी दुकानें भी बन्द। सारे मॉल, घूमने की जगह, सब कुछ बन्द। जैसे ही मम्मी ने यह खबर सुनी वह चाय छोड़ अन्दर कमरे में आ गईं और टीवी के सामने खड़े होकर न्यूज़ पर गौर करने लगीं।

नानी के चेहरे पर एक अलग ही चिन्ता नज़र आ रही थी। मम्मी के दिमाग में काम की टेंशन चल रही थी कि अगर काम पर नहीं जाएँगी तो घर का खर्चा कैसे चलेगा। सबके दिमाग में कुछ न कुछ चल रहा था। पर मेरे चेहरे पर तो यही सोचकर मुस्कराहट आ रही थी कि अब स्कूल बन्द रहेंगे। मम्मी, नानी को यह कहकर तसल्ली दे रही थीं कि एक महीने की ही तो बात है फिर सब कुछ खुल जाएगा। तुम वापिस आगरा जा सकती हो। इतने दिन रह लीं तो एक महीना और सही।

न्यूज़ का दूसरा चैनल लगाया तो देखा अब बिना मास्क लगाए कोई घर से बाहर नहीं निकलेगा। इतना सुनते ही मम्मी ने भैया को पैसे दिए और मास्क लाने

को कहा। उसने बाहर जाने के लिए पैर उठाया ही था कि एक आवाज़ आई, “कृपया अपने घरों से बाहर न निकलें। सिर्फ एक महीने तक हमें योगदान दें।” यह सुन सारी गली के लोग अपनी-अपनी बालकनी में आकर खड़े हो गए। बाहर आकर देखा तो कुछ लोग हाथ में माइक लेकर बोल रहे थे और गली-गली घूम रहे थे। “आपके ज़रूरत की चीज़ें आपको यहीं मिल जाएँगी। किसी को कहीं भी जाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। बस आप हमारा साथ दें ताकि इस कोरोना नाम की महामारी को हम जड़ से उखाड़ पाएँ।”

जब तक वे लोग गली में थे तब तक सब अपने-अपने घरों में थे। पर उनके जाते ही ऐसा लगा जैसे गली में मेला-सा लग गया... सारे बच्चे, बड़े सब गली में आ चुके थे। गली में हर जगह छोटे-छोटे समूह बनाकर यही बात चल रही थी कि एक महीने तक घर में कैसे बन्द रहेंगे!

अब हम सब लॉकडाउन में थे और अभी एक हफ्ता ही गुज़रा था। मैंने थोड़ा दुखी होते हुए कहा, “अभी तो सिर्फ एक हफ्ता ही गुज़रा है।” नानी को खुले

वातावरण में रहने की आदत है। गाँव में उनका बड़ा घर, इतने सारे खेत-खलिहान सब हैं। यहाँ शहर के घरों में नानी का दम घुटता है। नानी अब पूरे घर में कभी अन्दर तो कभी बाहर बालकनी में घूमती नज़र आतीं। वैसे मम्मी को कभी रोज़-रोज़ बाज़ार जाते नहीं देखा। लेकिन जब नानी का घर में दम घुटता था तो नानी को घुमाने के लिए वो रोज़ बाज़ार जाती थीं। इस बहाने नानी का मन भी हल्का हो जाता। पर वही बाज़ार आजकल किसी सुनसान जगह से कम नहीं लग रहा है। अब तो बाज़ार से घर आते ही कमरे में नहीं, हाथ धोने के लिए बालकनी में जाना पड़ता है।

एक महीने की ज़िन्दगी ज़हन्नुम से भी ज़्यादा बदतर हो चुकी थी। इस वक्त तो इन्सानों से अच्छे जानवर हैं जिन्हें कहीं जाने के लिए कोई रोकटोक नहीं है। इस वक्त इन्सान पिंजरे में कैद किसी पक्षी से कम नहीं है। आखिर यह एक महीना कैसे न कैसे कट गया!

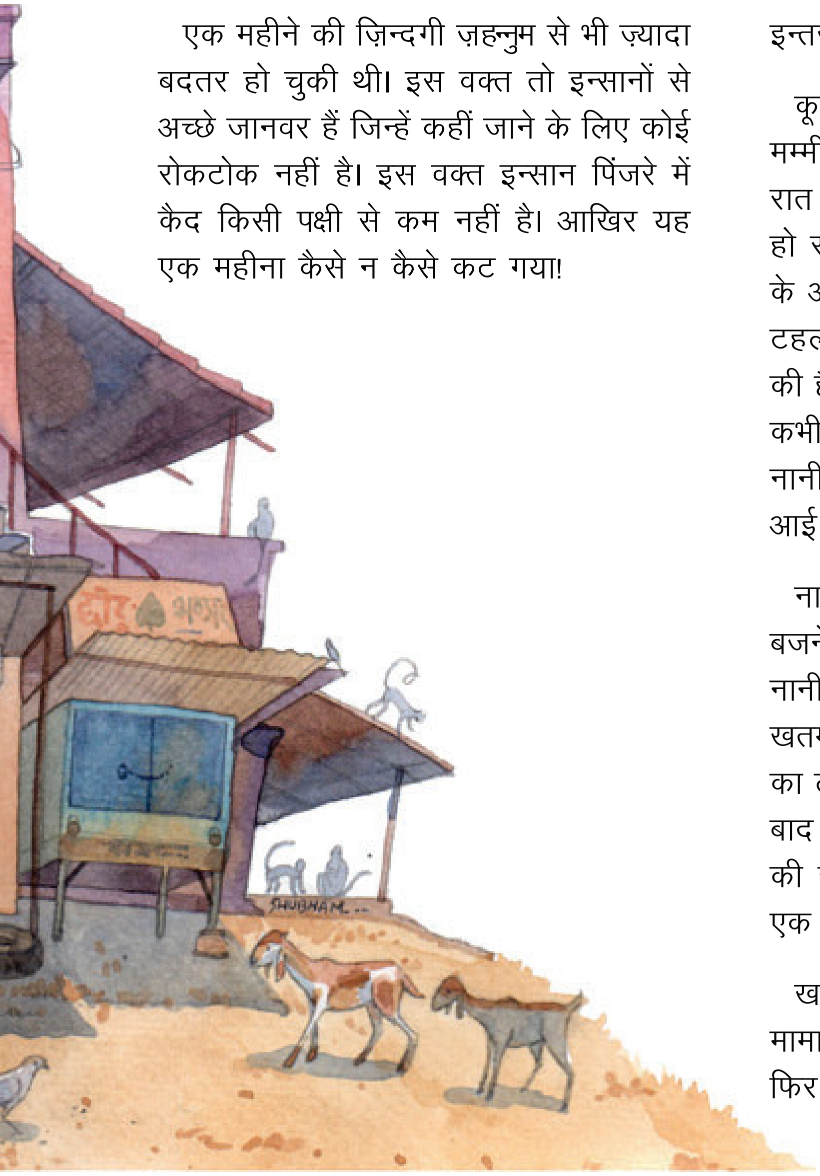

आखिरी दिन था इस लॉकडाउन का। सब उम्मीद लगाकर बैठे थे कि कल लॉकडाउन खुल जाएगा और नानी वापिस अपने घर जा पाएँगी। मम्मी ने टीवी चलाया और न्यूज़ लगाई तो देखा कि कल पी.एम. सुबह ग्यारह बजे बताएँगे कि कल से लॉकडाउन खुलेगा या जारी रहेगा। यह सुन नानी और मम्मी दोनों की आशा, निराशा में बदल गई। मम्मी ने नानी के कन्धे पर हाथ रखा और छोटी-सी मुस्कराहट के साथ हौंसला देते हुए कहा, “चिन्ता मत करो। खुल जाएगा।”

मम्मी ने खाना बनाया और प्लेट में परोसकर नानी को दे दिया। खाने के बाद अब सोने की तैयारी हो रही थी। कूलर के सामने बिछौना तैयार कर दिया गया। नानी की नींद उड़ चुकी थी पर शायद हमें दिखाने के लिए वह जल्दी ही आँखें बन्द करके लेट जाती थीं। यह रात कोई मामूली रात नहीं थी, इन्तज़ार की रात थी।

कूलर के सामने लेटकर ठण्डी हवा महसूस की ही थी कि मम्मी को मन ही मन बड़बड़ाते हुए देखा। आठ घण्टे की यह रात शायद नानी और मम्मी के लिए कुछ ज़्यादा ही लम्बी हो रही थी। अब आहिस्ता-आहिस्ता रात बीत रही थी। सुबह के आठ बजे थे, जब मेरी आँख खुली। नानी को बालकनी में टहलते हुए देखा। मुलायम सूती साड़ी पहनीं नानी छोटे कद की हैं, लेकिन हैं बहुत फुतीर्ली। हमारी दिल्ली की बोली कभी-कभी उन्हें समझ में नहीं आती है। हम तो लगभग हर साल नानी घर हो आते हैं लेकिन नानी बहुत सालों बाद दिल्ली आई हैं।

नानी कमरे में आईं तो मम्मी ने टीवी ऑन कर दिया। ग्यारह बजने में तकरीबन पन्द्रह मिनट बाकी थे पर ये एक-एक मिनट नानी के लिए एक-एक घण्टे की तरह था। उनका इन्तज़ार अब खतम हो चुका था। ग्यारह बजे जब न्यूज़ लगाई तो पी.एम. का लाइव शो आ रहा था। बहुत देर तक उनकी बातें सुनने के बाद एक ऐसी खबर सुनाई जिसे सुन नानी और मम्मी दोनों की उम्मीद टूट गई। लॉकडाउन खतम नहीं हुआ था, बल्कि एक महीने के लिए फिर से लग चुका था।

खबर सुनने के दो मिनट बाद ही मामा का फोन आया। मामा ने कहा, “अब मम्मी यहाँ कैसे आएँगी? लॉकडाउन तो फिर से एक महीने के लिए लग गया है!” मम्मी ने नानी को

फोन देते हुए कहा, “लो बात करके मन थोड़ा हल्का हो जाएगा।” मामा की आवाज़ सुनते ही नानी की आँखों में पानी आ गया। नानी को देखकर ऐसा लगा कि अभी नानी पलक झपकाएँगी और वो पानी आँसू बनकर बाहर आ जाएगा। पर किसी तरह खुद को सँभालते हुए नानी ने पलक तो नहीं झपकाई पर मामा से बात करते ही नानी बालकनी में जाकर अपनी साड़ी के पल्लू से अपने छुपाए आँसू को पोंछने लगीं। मम्मी पीछे खड़ीं नानी को ही निहार रही थीं। उनके दिमाग में बस यही घूम रहा था कि क्या किया जाए! थक-हारकर नानी अन्दर आकर बेड पर बैठ गई।

अब यह महीना भी रोज़ गली में उन्हें घुमाते हुए मन बहलाने की कोशिश में निकल गया। आज फिर जब लॉकडाउन खुलने की खबर का इन्तज़ार हो रहा था तो नानी की उम्मीद वही खबर सुनकर टूट गई। उम्मीद टूटने के बाद शायद फिर एक बार और कोई भी उम्मीद लगाना नानी के लिए नामुमकिन था। उसी वक्त मामा का फोन आया। इस बार यह सब मामा के बर्दाश्त के बाहर था। क्योंकि वहाँ भी परेशानियाँ बढ़ गईं थी। नानी होतीं तो छोटे उस्ताद का ध्यान भी रख लेती थीं। मामा ने ठान लिया था कि वह कैसे न कैसे करके नानी को वापस आगरा लेकर आएँगे। मामा ने मम्मी से कहा, “तुम किसी तरह मम्मी को लेकर स्टेशन आ जाओ, मैं यहाँ से कैसे भी करके आ जाऊँगा।”

मम्मी ने कहा, “पर तू यहाँ कैसे आएगा, बस, ट्रेन तो बन्द हैं?” मामा ने कहा, “वह मुझ पर छोड़ दो।” इतना कहकर मामा ने फोन काट दिया। अगले ही दिन मामा ने बाइक से दो सौ किलोमीटर का सफर तय किया। नानी और मम्मी पूरी तरह से तैयार खड़ी थीं। दोनों घर से निकल गए। पूरी सड़क पर कोई ऑटो, रिक्शा दूर-दूर तक नज़र नहीं आ रहा था। अन्त में जाकर एक ऑटो वाले को अपनी ओर आते देखा तो दोनों के चेहरे खुशी से चमक उठे। ऑटो वाले को स्टेशन जाने के लिए पूछा। वह हिचकिचाते हुए बोला, “देखिए मैडम, चल तो सकता हूँ पर...!” ऑटो वाले का चेहरा देखकर मम्मी समझ गई थीं कि वह ज़्यादा पैसे की बात कर रहा है। “ठीक है”, बोलकर मम्मी ने नानी को ऑटो में बिठाया और खुद भी बैठ गईं। वापस उसी ऑटो से आने का किराया भी बँधवा लिया।

मम्मी और नानी स्टेशन पहुँचीं। वहाँ बाइक पर मामा को बैठे देखकर नानी की आँखें खुशी से भर आईं। उधर मामा के भी चेहरे पर मुस्कान आ गई। ऑटो से उतरकर मम्मी ने नानी को बाइक पर बिठाया। मामा और नानी वापिस आगरा की ओर निकल गए।

तनिष्का सर्वोदय कन्या विद्यालय, नन्दनगरी, दिल्ली में नौवीं कक्षा में पढ़ती हैं। वह पिछले छह वर्षों से अंकुर संस्था, दिल्ली से जुड़ी हैं।

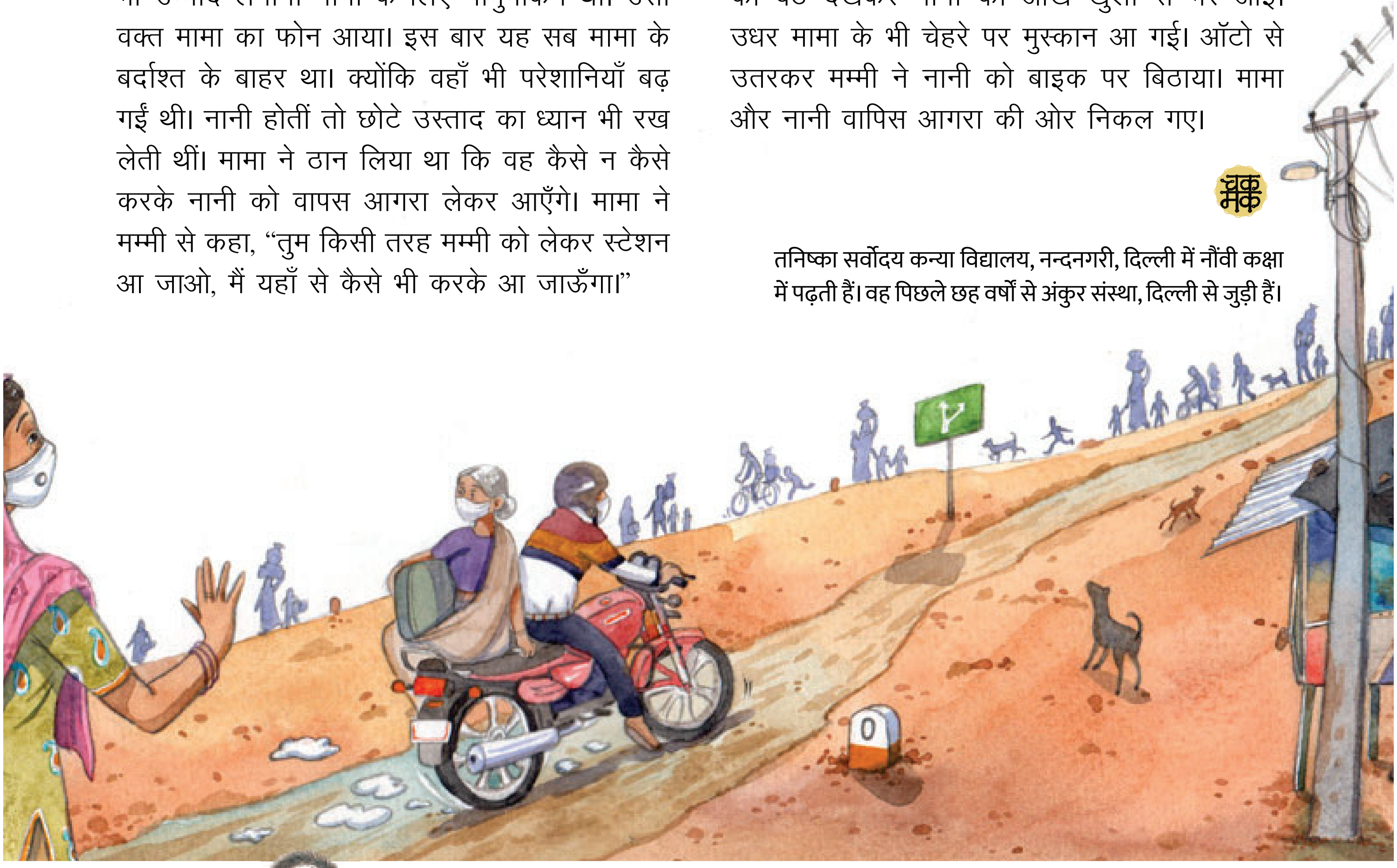

तुम भी जानो

जब महिलाएँ भी शिकार करती थीं

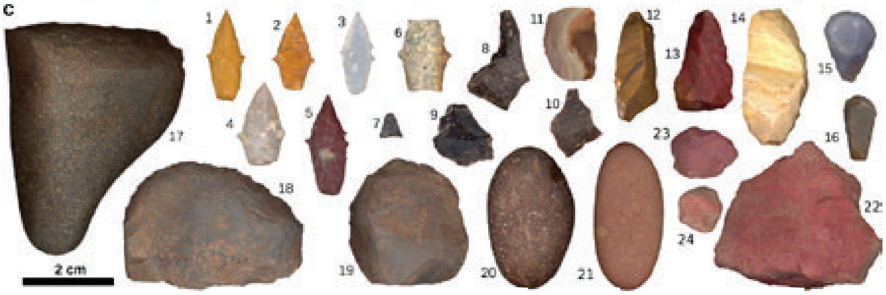

कुछ समय पहले दक्षिणी पेरू के छह कब्रगाहों में लगभग 9000 साल पुराने मानव अवशेष मिले थे। इनमें से एक कब्र में फेंककर इस्तेमाल करने वाले पत्थर के 20 औज़ार और ब्लेड शव के पास करीने से रखे हुए थे। औज़ारों को देखकर लगता था कि शव किसी प्रमुख शिकारी का होगा। और मान लिया गया कि वह पुरुष ही रहा होगा।

गौर करने पर समझ आया कि शव की हड्डियाँ पतली और हल्की हैं। इससे अनुमान लगाया गया कि यह शव किसी महिला का हो सकता है। और अब हाल ही में हुआ अध्ययन इस अनुमान की पुष्टि करता है। वास्तव में यह शव सत्रह से उन्नीस वर्ष की महिला का है।

यह जानकर कुछ शोधकर्ताओं ने अमेरिका के 107 पुरातात्विक स्थलों की चौदह से आठ हज़ार वर्ष पुरानी 429 कब्रों की फिर से जाँच की। शिकार करने वाले औज़ारों के साथ मिलीं कब्रों में से 10 महिलाओं की और 16 पुरुषों की थीं। यानी कि शुरुआत में शिकारी होने का आधार शायद लैंगिक नहीं था।

रीछ को भगाने का एक नया उपाय

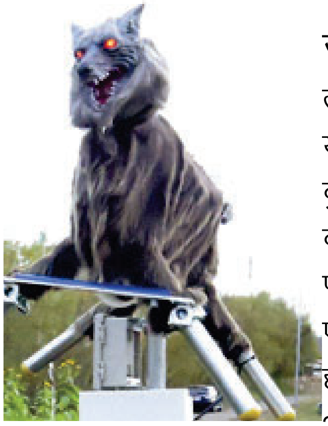

जापान के होकाइडो द्वीप में खाने की तलाश में रीछ शहरों के अन्दर आने लगे थे। यह बात लोगों के लिए खतरा बन गई थी। कुछ अफसरों ने एक महल्ले में इस समस्या का हल एक भयावह भेड़िए के रूप में दिया। पर यह सचमुच का भेड़िया नहीं है। यह तो एक रोबोट है जो रीछ को डराने में काफी हद तक कामयाब रहा है। कृत्रिम फर से ढँके 2.5 फुट ऊँचे और 4 फुट लम्बे इस रोबोट पर मोशन सेन्सर लगे हैं। यानी कि आसपास किसी भी तरह की हरकत होने पर इसकी लाल आँखें चमकने लगती हैं, ये अपने डरावने दाँत दिखाने लगता है। सिर्फ यही नहीं यह 60 से भी अधिक तरह की चीखें निकाल सकता है जो एक किलोमीटर से भी अधिक दूरी तक सुनाई दे सकती हैं। होकाइडो के निवासी अपने इलाकों में अब चैन से घूमते-फिरते हैं।

नमक से बढ़ जाती है मिठास!

खाने के स्वाद की पहचान हमारी जीभ की स्वाद-कलिकाओं की ग्राही कोशिकाओं से होती है। इनमें से कुछ खास मीठे के प्रति संवेदनशील होते हैं। इन कोशिकाओं में एक खास प्रोटीन है जो सोडियम (जो नमक में होता है) के सहारे ग्लूकोज़ को कोशिकाओं के अन्दर ले जाता है। यानी कि अगर मीठे में कुछ नमक शामिल हो तो इस प्रोटीन के कारण ज़्यादा ग्लूकोज़ ग्राही कोशिकाओं के अन्दर चला जाता है और मीठे का एहसास बढ़ जाता है।

एक पत्ते का जीवन

परदे के पीछे

देखने से लगता है कि पौधे दिन भर बस आराम से धूप सेंकते हैं, पर ऐसा है नहीं। इनके पत्ते कड़ी मेहनत कर रहे होते हैं। हवा से कार्बन डाइऑक्साइड, सूरज से रोशनी और मिट्टी से पानी को मिलाकर ये ग्लूकोज़ और ऑक्सीजन बनाते हैं। ग्लूकोज़ का पौधे इस्तेमाल करते हैं और ऑक्सीजन हवा में छोड़ देते हैं।

फील्ड डायरी के लिए

- इकट्ठा करो अलग-अलग आकार व आकृतियों के कम से कम पाँच पत्ते इकट्ठा करो। पत्ते इकट्ठा करते समय थोड़ा ध्यान रखना कि किसी सोते या खाते हुई छोटे जीव को परेशान तो नहीं कर रहे हो। अपनी डायरी के पन्नों के बीच इन पत्तों को दबाकर रखना ताकि ये चपटे हो जाएँ।
- नाम लिखो ये पत्ते जिन पौधों के हैं उनके अगर तुम्हें उनका नाम नहीं पता, तो परिवार के किसी सदस्य, दोस्त, माली या फिर पौधों का अध्ययन करने वाले किसी व्यक्ति से ज़रूर पूछना।
- ध्यान से देखो क्या तुम पत्तों पर लकीरें देख सकते हो – ये उनका विन्यास है। हर पत्ते के ऊपरी और निचली दोनों सतहों को गौर से देखो और पत्ते का चित्र अपनी डायरी में बनाओ।
- छूकर देखो पत्ते की दोनों सतहों पर धीरे-से अपनी उँगलियाँ फेरो – क्या पत्ता मोटा या पतला है, खुरदरा, रोंएदार या मोम-सा है? पत्ते पर क्या तुम्हें कोई मोटे हिस्से समझ में आए?

- सूँघकर देखो पत्ते को मसलकर सूँघो। कुछ पत्तों में से चिपचिपा दूध निकलता है, जिससे सावधान रहना।
- तुलना करो ये सारे पत्ते एक-दूसरे से कैसे अलग हैं?

पसीना बहाओ

पौधे जड़ों से ऊपर पत्तों तक पानी खींचते हैं। पत्ते थोड़ा-सा पानी खाना बनाने में इस्तेमाल करते हैं और ज़्यादातर पानी हवा में छोड़ देते हैं। इसे तुम खुद देख सकते हो।

- ऐसा कोई पौधा चुनो जो धूप में हो। गमले का पौधा भी चुन सकते हो। उसे अच्छे-से पानी दो।
- 2-4 पत्तों को एक-एक पन्नी से ढँक दो। पन्नी को पत्ते के डण्ठल या तने से बाँध दो या फिर टेप से चिपका दो।
- 1-2 घण्टों के बाद पत्तों से पन्नी को सावधानी से निकालो। ध्यान रखना कि पौधे को कोई नुकसान न पहुँचे।
- क्या पन्नी में तुम पानी की बूँदें देख सकते हो?
- रात को, सूरज ढलने के बाद इसे दोहराना। क्या इस बार तुम्हें पानी की बूँदें दिखती हैं?
- दिन और रात के प्रयोग में क्या तुम्हें पानी की मात्रा में कोई अन्तर दिखता है?

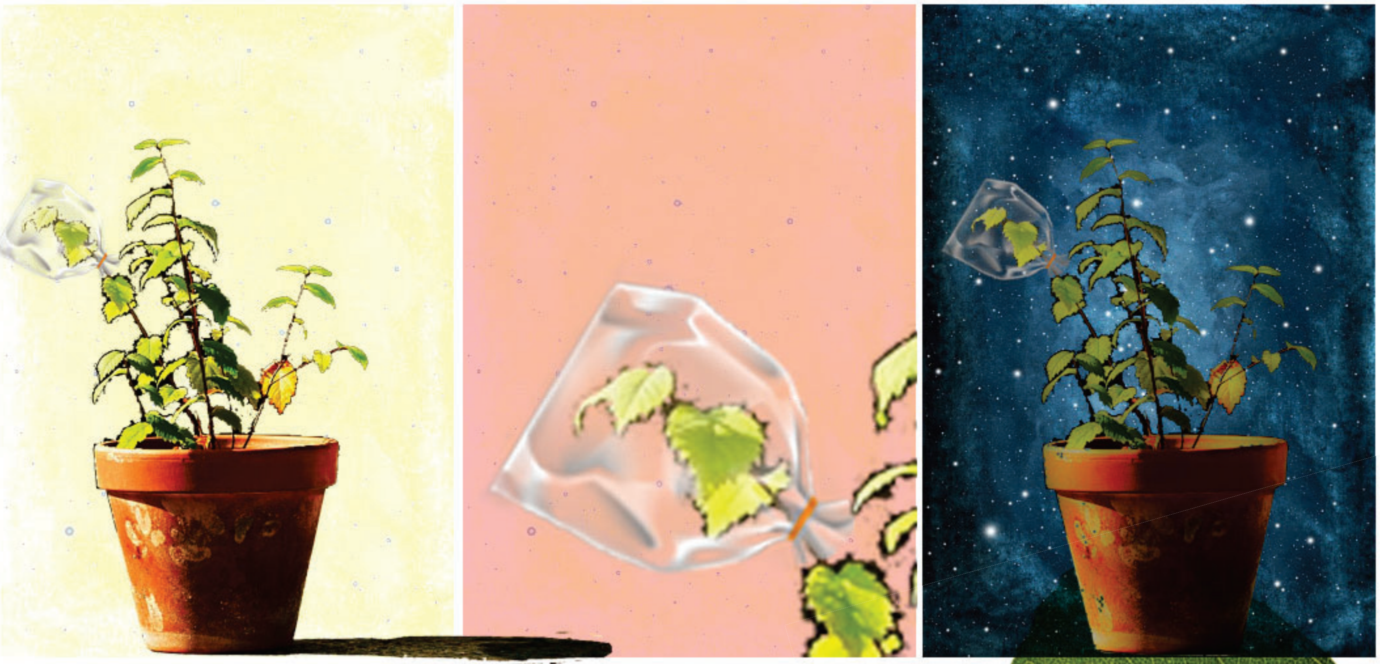

प्रतियोगिता

पत्तों के अपने अवलोकन हमें chakmak@eklavya.in पर भेजो और पौधों पर एक किताब जीतने का मौका पाओ।

अनुवाद: विनता विश्वनाथन

nature conservation foundation
science for conservation

बचपन

... कुछ ही समय पहले

प्रोइति रॉय

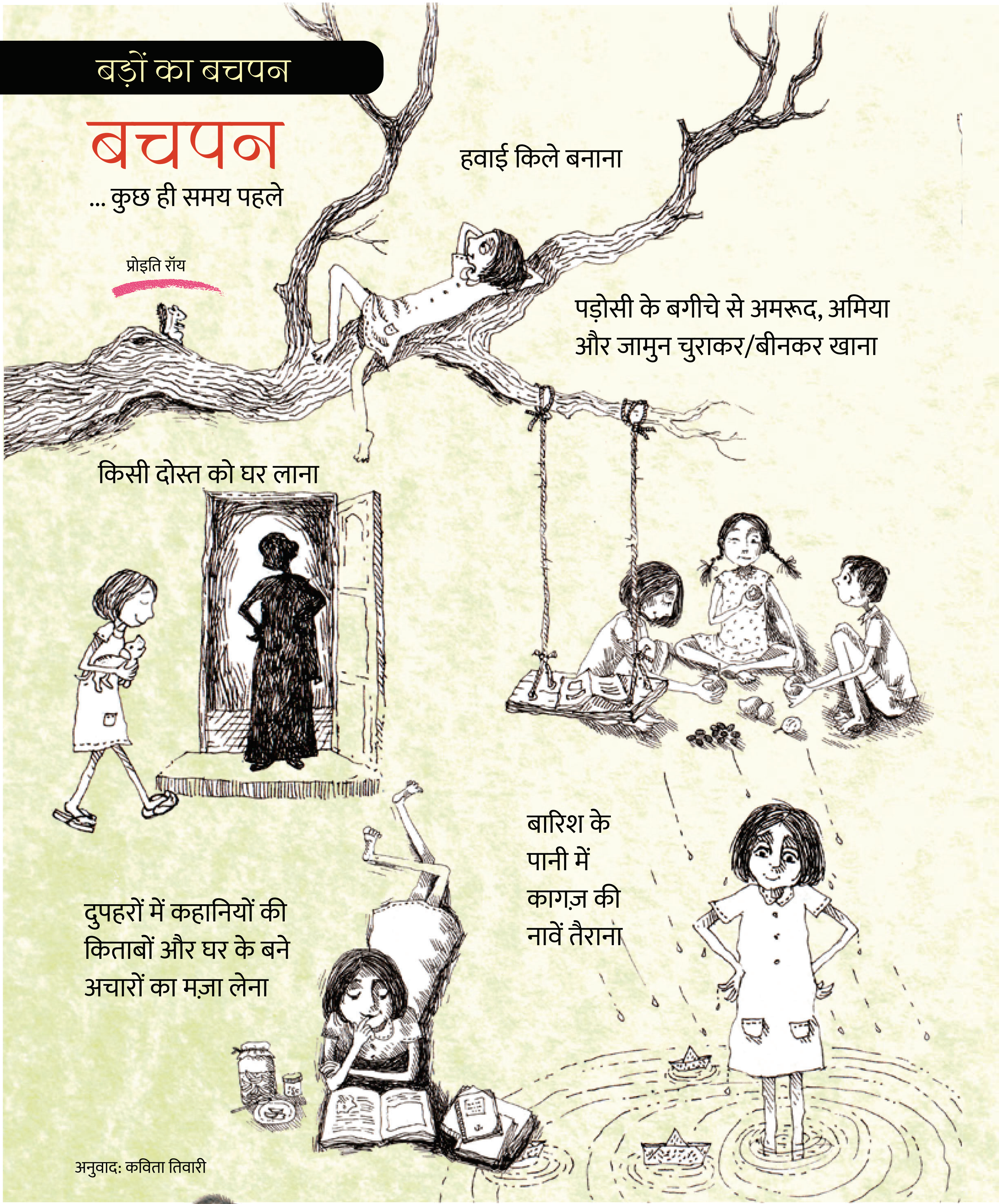

हवाई किले बनाना

पड़ोसी के बगीचे से अमरूद, अमिया और जामुन चुराकर/बीनकर खाना

किसी दोस्त को घर लाना

बारिश के पानी में कागज़ की नावें तैराना

दुपहरों में कहानियों की किताबों और घर के बने अचारों का मज़ा लेना

अनुवाद: कविता तिवारी

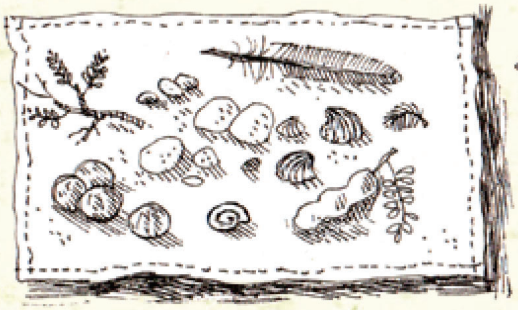

प्रकृति का ख़ज़ाना

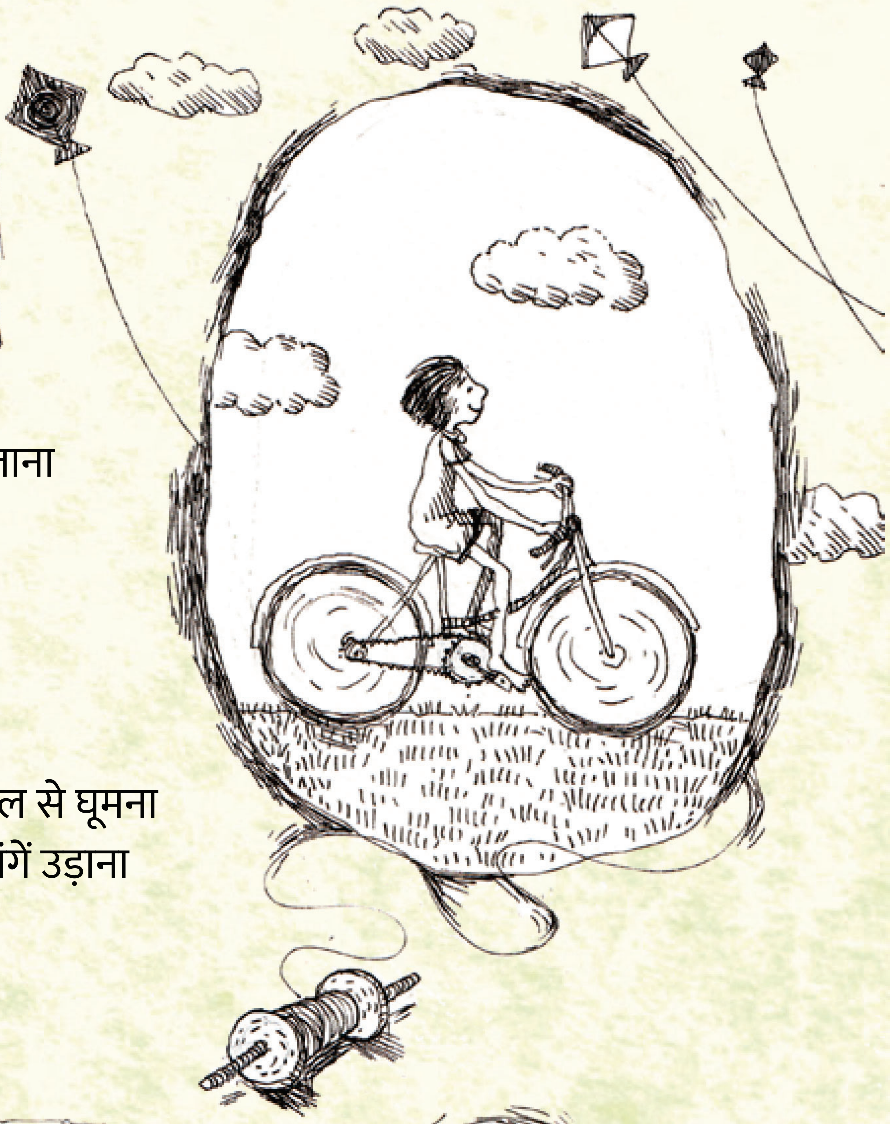

साइकिल से घूमना
और पतंगें उड़ाना

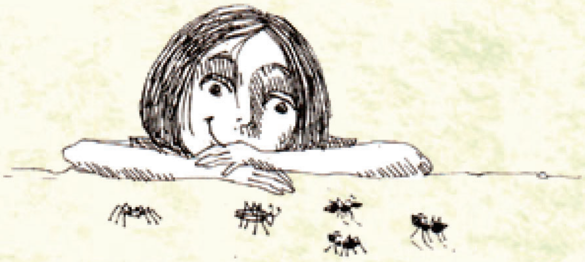

कीड़ों-मकौड़ों को ताकना

बत्ती गुल और
दादी की भूतों
वाली कहानियों
का शुरू होना

भूल भुलैया

चित्र: दिलीप चिंचालकर

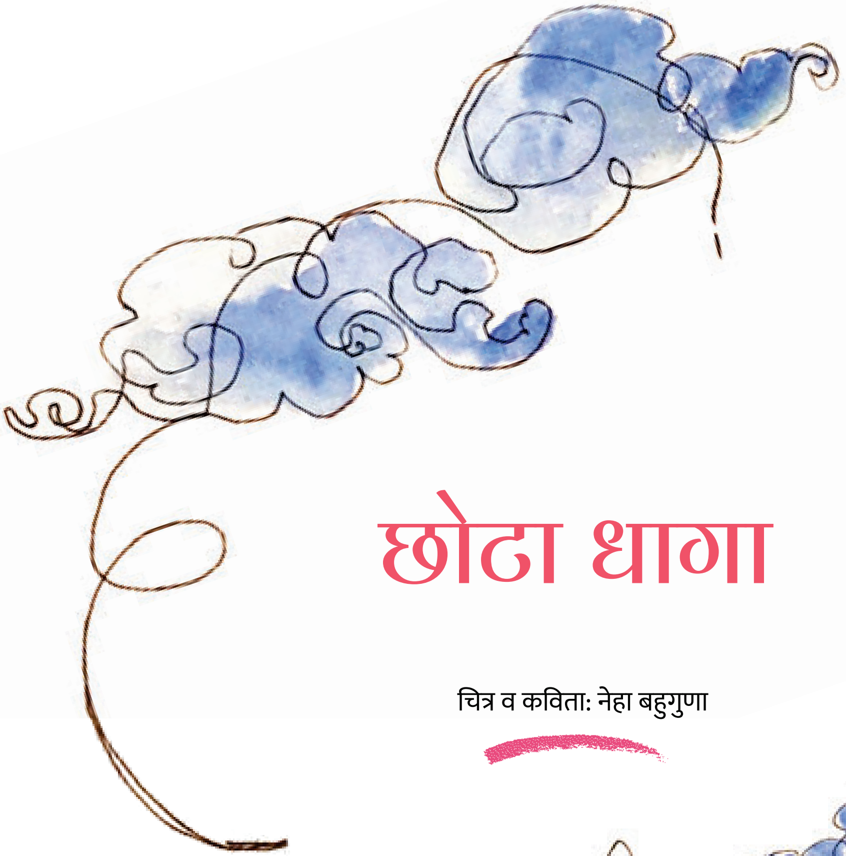

छोटा धागा

चित्र व कविता: नेहा बहुगुणा

छोटा धागा ज़ोर-से भागा
उछलके पुल पे झण्डा लेके
दुआ को माँगा, ज़ोर-से भागा
घर के अन्दर सजे थे बरतन
खिड़की से झाँका, छोटा धागा

हवा के सर पे चढ़के ऊपर
बादल माँगा फिर ज़ोर से लागा
बाँस के जंगल हू-हू करते
रात को जागा, छोटा धागा
अरे! ना कर नागा, छोटा धागा
ज़ोर-से भागा

मंजरी शुक्ला
चित्र: हबीब अली

सारा और ज़ारा

दो बहनें थीं। सारा और ज़ारा। एक सात साल की और एक आठ साल की। एक साल बड़ी होने के कारण सारा, ज़ारा पर हुकुम चलाया करती। पर ज़ारा कौन-सी कम थी! वो ऐसा कोई मौका नहीं छोड़ती कि सारा चैन से बैठ सके। सारा, ज़ारा का चश्मा छुपा देती तो ज़ारा उसकी किताब। ज़ारा, सारा की चप्पल छुपा देती तो सारा उसका पेंसिल बॉक्स। दिन भर यही चलता रहता। जब दोनों गुत्थम-गुत्था होकर लड़तीं और मम्मी से शिकायत करतीं तो मम्मी घर से बाहर चली जातीं। दोनों को समझा-समझाकर उनका गला इतना बैठ गया था कि दिन में चार बार गरारे करके भी ठीक नहीं हो रहा था।

एक दिन मम्मी पड़ोस में रहने वाली शर्मा आंटी के घर गईं। सारा और ज़ारा भी उनके पीछे-पीछे हो लीं। दोनों को साथ देखकर सर्दी के मौसम में भी शर्मा आंटी के पसीने छूट गए। असल में एक बार उनके घर पर ही सारा और ज़ारा की लड़ाई हो गई थी। ड्राइंग रूम के सामान से लेकर बगीचे के फूल तक सब तहस-नहस कर दिया था दोनों ने। आज शर्मा आंटी ने उन्हें देखते ही घर का दरवाज़ा बन्द कर लिया।

मम्मी बोलीं, “ये हाल बना दिया है तुम दोनों ने कि लोग तुम्हें देखते ही घर के अन्दर छुप जाते हैं।”

“हम तो बस आपके पीछे चले आए थे। आंटी बेकार में ही डर गईं,” सारा बोली।

“घर चलो।” मम्मी दोनों को घूरते हुए बोलीं।

सारा और ज़ारा मम्मी के पीछे चल पड़ीं। तभी सारा की नज़र नीबू के पेड़ के पास बैठे खरगोश पर पड़ी। दूर से वह रूई के गोले जैसा लग रहा था। उसे देखते ही सारा में हिरन-सी फुर्ती आ गई। उसने लपककर खरगोश को उठा लिया। ज़ारा ने उसे रोकना चाहा तो सारा दौड़ी और सीधे घर के अन्दर चली गई।

ज़ारा हाँफते हुए उसके पीछे आई और बोली, “तू चोर।”

“मैं चोर नहीं हूँ।” सारा बोली

“तूने शर्मा आंटी का खरगोश चुराया।” ज़ारा बोली

“अगर मेरे पास एक भी खरगोश नहीं होता तो मैं चोर होती। पर मेरे पास तो पहले से ही पाँच खरगोश हैं।”

ज़ारा चोरी वाली बात भूलकर पाँच खरगोश वाली बात पर अटक गई।

“कहाँ हैं पाँच खरगोश?”

ज़ारा ने आश्चर्य से पूछा।

"आ, दिखाती हूँ" कहते हुए सारा मम्मी के कमरे की तरफ चल दी। ज़ारा भी उसके पीछे-पीछे कमरे में पहुँच गई। सारा ने मम्मी के पाँच शीशों वाले ड्रेसिंग टेबल के सामने खरगोश को रख दिया।

"देख, हैं ना पाँच खरगोश!" सारा अपनी हँसी रोकते हुए बोली। यह सुन ज़ारा उसे मारने को कूदी और घबराहट में सारा के हाथ से खरगोश छूट गया। तभी बाहर से शर्मा आंटी के चिल्लाने की आवाज़ आई। "मैं जानती हूँ कि मेरा खरगोश आपके घर में ही है। सारा और ज़ारा के अलावा और कोई ये काम कर ही नहीं सकता।"

मम्मी कुछ कहतीं इससे पहले ही खरगोश मम्मी के पैरों के पास जाकर बैठ गया। खरगोश को देखते ही शर्मा आंटी का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। उसे उठाते हुए वे बोलीं, "मैं तो पहले से ही जानती थी कि ये इन दोनों का ही काम है।"

"नहीं आंटी, इसमें सारा की कोई गलती नहीं है। आपका खरगोश मैं ही ले आई थी", ज़ारा बोली।

यह सुनकर सारा को तो अपने कानों पर यकीन ही नहीं हुआ। उसने अपनी आँखें मसलीं और खुद को चिकोटी काटी कि कहीं वह सपना तो नहीं देख रही।

तभी मम्मी बोलीं, "माफ कर दीजिए। ज़ारा से गलती हो गई। मैं जैसे ही आपका खरगोश देखती तुरन्त वापिस करने आ जाती।"

"अरे, आप इन दोनों को नहीं जानतीं। ये तो घर में शेर छुपा दें तो भी किसी को पता ना चले" कहते हुए शर्मा आंटी ने ज़ारा को घूरा और वहाँ से चल दीं।

सारा और ज़ारा ने सोचा कि मम्मी अब उनकी अच्छे-से खबर लेंगी। उधर मम्मी सोच रही थीं कि खरगोश के बहाने ही सही कम से कम ये दोनों आपस में लड़ी नहीं। एक-दूसरे को कितना प्यार करने लगी हैं। एक को बचाने के लिए दूसरी खुद डाँट खाने को तैयार हो गई।

पर मम्मी अभी कमरे के अन्दर भी नहीं पहुँची थीं कि सारा दौड़ते हुए आई और बोली, "इसने मेरी चप्पल नाली में फेंक दी।"

ज़ारा बोली, "पहले इसने मेरा चश्मा फेंका।"

सारा बोली, "इसने मेरी मेज़ की किताबें गिरा दीं।"

"इसने मेरी किताबों पर अपना नाम लिख दिया।" ज़ारा पैर पटकते हुए बोली।

पर मम्मी तो बहुत पहले ही वहाँ से जा चुकी थीं। ज़ारा और सारा अभी भी बोले जा रही थीं।

मेरा पन्ना

चित्र: द्युति, मुखर्जी, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेला

विशाल कुमार, पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय धुसाह -प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

एक बार मैं और मेरा भाई पापा के साथ मेले में गए। मेले में बहुत भीड़ थी। मेरा भाई बोला, "चलो भैया, इस झूले पर झूलते हैं।" मैंने झूले वाले भैया से पूछा, "इस झूले का टिकट कितना है।" "20 रुपए है", उन्होंने कहा। मेरा भाई पापा से 40 रुपए लिया। हम दोनों भाई चले झूला झूलने। जैसे ही झूला स्टार्ट हुआ तो मुझे चक्कर आने लगा। तब मेरा भाई पापा से कहकर झूला रुकवा दिया। फिर हम दोनों भाई झूले से उतर आए।

उपहार

शाम्भवी सिंघल
आठवीं
सेंट फ्रांसिस
स्कूल गोमती नगर
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

हम सपरिवार बैंकॉक घूमने गए थे। वहाँ हम एक होटल में रुके थे। उस दिन मेरा जन्मदिन था। पापा किसी काम से बाहर गए थे। इसलिए हम मम्मी के साथ बाज़ार चले गए। वापिस होटल लौटे तो रूम सर्विस वाला एक सुन्दर केक और गुलदस्ता दे गया। मैं समझ गई कि यह पापा का सरप्राइज़ है। मुझसे रहा नहीं गया, मैंने केक काटा और अपनी बहन के साथ खाने लगी। मस्ती में मेरी बहन गुलदस्ते के फूल निकालकर मेरे ऊपर डालने लगी। इतने में पापा कमरे में आए। मैंने उनको केक के लिए धन्यवाद दिया। पापा ने कहा कि उन्होंने तो कोई केक नहीं रखा था। हमारी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। तभी कमरे का फोन बजा। फोन सर्विस वाले का था। उसने किसी और का केक गलती से हमारे कमरे में भिजवा दिया था। तब हमारी हालत और खराब हो गई जब सर्विस वाले ने कहा कि वह उसे लेने के लिए कमरे पर आ रहा है।

चित्र: अलका कुमारी, ग्राम बड़हुलिया, परिवर्तन सेंटर, सिवान, जीरादेई, बिहार

मेरा पन्ना

चिनी, मिनी और प्रताप बा

रचना, मनीषा, माया
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय
फरालिया, देवगढ़, राजसमन्द, राजस्थान

एक चिनी थी। एक मिनी थी। और एक प्रताप बा थे। आगे गिया, आगे गिया। चिनी ने दस रुपया लादा। मिनी ने दस रुपया लादा। और प्रताप बा ने पाँच रुपया लादा। आगे गिया, आगे गिया। एक दुकान अई। चिनी पापड़ लिदो। मिनी पापड़ लिदो। प्रताप बा पापड़ लिदो। आगे गिया, आगे गिया। एक धूणी लग रही थी। चिनी पापड़ सेंकयो। मिनी पापड़ सेंकयो। प्रताप बा का पापड़ जल गियो। आगे गिया, आगे गिया। एक तलाब आयो। चिनी पानी पिदो। मिनी पानी पिदो। प्रताप बा डूब गिया। चिनी जोर किदो। मिनी जोर किदो। प्रताप बा निकल गिया। आगे गिया, आगे गिया। एक मन्दिर आयो। चिनी धोक लागी। मिनी धोक लागी। प्रताप बा लाडू उठाकर भाग गिया।

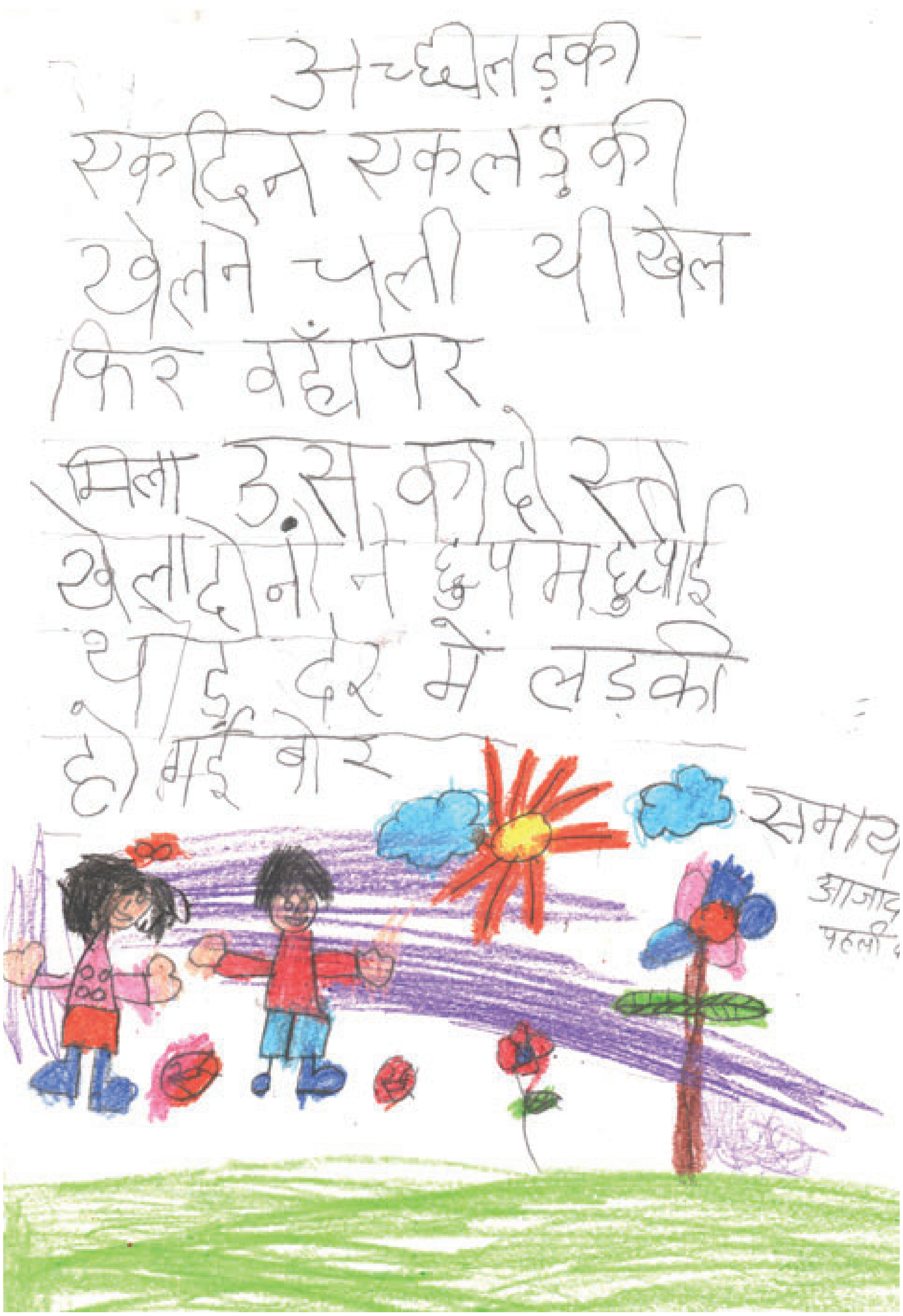

समायरा आजाद, पहली

चित्र: पूजा कुमारी, ग्राम गोठी, परिवर्तन सेंटर, सिवान, जीरादेई, बिहार

चित्र: कृपा, सातवीं, रॉयल कॉन्कॉर्ड इंटरनेशनल स्कूल, बेंगलुरु, कर्नाटक

हम

राजकुमारी
मुस्कान संस्था
भोपाल, मध्य प्रदेश

सुबह-सुबह महल्ले में होता है झगड़ा
कोई देता है गाली, कोई देता है ताली।
निकलती है जब सूरज की लाली
पेट और बोरी दोनों होते हैं खाली।
दूर-दूर तक भाग-भागकर जाते हैं।
तभी कुछ पैसे मिल पाते हैं।
कभी-कभी खाली हाथ लौट आते हैं
कभी भरपेट खाते हैं, तो कभी भूखे सो जाते हैं।

सुनहरा हिरण

चित्र व कहानी: उमेश कुमार
चौदह वर्ष
भोपाल, मध्य प्रदेश

एक सुनहरा हिरण था। बहुत ही बड़े सींगों वाला। एक दिन गाँव में गेंहूँ की फसल देखकर वह लालच में आ गया। और गाँव में घुस खेत में चरने लगा। एक बूढ़े पारदी ने उसे देख लिया। सोचा इसे पकड़ लेता हूँ। बच्चे पेट भर बोटी खाएँगे। खाल गाँव के पटेल को बेच दूँगा। सींग वैद्य को। वह जाल बिछाने लगा। हिरण की उस पर नज़र पड़ी। वह पलटकर भागा। पारदी उतना ही तेज़ पीछे-पीछे भागा। एक नाला आया। हिरण कूदकर पार हो गया। पारदी ने उतरकर पार किया। हिरण ज़ोर-से दौड़ा और तब तक नहीं रुका जब तक खूब घने जंगल में नहीं पहुँच गया। पहले उसने ज़ोर-ज़ोर से साँस ली। फिर पानी पिया। फिर पत्तियाँ खाईं। तब जाकर उसकी जान में जान आई।

एक ही हाण्डी के चटपटे अट्टे-बट्टे

दिलीप चिंचालकर

"देवजी हौ!"

बरसाती नाला पार कर टीले की चढ़ाई शुरू होते ही मैंने देवजी को आवाज़ लगाई। थोड़ा ऊपर आते ही कटहल की फुनगी और फूस की छत दिखाई देने लगी। गाय के गले में बँधी घण्टी और मुर्गे की बाँग सुनाई दी। जंगल-झाड़ियों में पाँच-सात किलोमीटर पैदल चलकर मैं डोंगरी पाड़े आ पहुँचा। यह महाराष्ट्र के पालघर ज़िले के डहाणू तालुके का वारली वनवासी इलाका है। मेरा दोस्त देवजी वारली वनवासी है।

"देवजी खूब भूख लगी है। झटपट कुछ खिलाओ।"

देवजी कुछ नहीं बोला। थोड़ा मुस्करा दिया। वह सब्ज़ियों की दुकान लगाए बैठा था। एक गोभी, थोड़े बैंगन, थोड़ा हरा धनिया, कुछ आलू-प्याज़-रतालू, दो ठो अजीब-से कन्द और ढेरी भर सुरती पापड़ी फलियाँ। मैंने कहा, "अरे, यहाँ कौन तुमसे सब्ज़ी खरीदने आएगा? तुम्हारा पड़ोसी वनवासी भी तुमसे फर्लांग भर दूर रहता है और इतनी सब्ज़ी-भाजी वह भी उगा लेता होगा।"

देवजी कुछ नहीं बोला। अब उसने प्याज़ छीलकर उन्हें बीच में से थोड़ा-थोड़ा काट दिया। मैं समझ गया कि आज खाने में यही सब है। झुरमुट के पीछे से उसकी घरवाली जानकी नमूदार हुई और उसने मेरे हाथ में नीरा का तूम्बा थमा दिया। मतलब यह था कि अभी खाने में ज़रा देर है। तब तक धीरे-धीरे इसे गटको।

नीरा ताड़, खजूर या नारियल के तने के ऊपरी हिस्से से निकाला हुआ रस होता है। मीठा तो होता ही है पेट के लिए भी अच्छा होता है। मगर धूप चढ़ने के साथ यह थोड़ा गन्नाटा भी देने लगता है। मेरा माथा थोड़ा चकराने लगा। तब जानकी ने एक डोंगा लाकर चबूतरे पर रख दिया। उसमें कुछ पिसा-कुटा था। हरा-हरा और भूख जगाने वाली सुगन्ध से भरपूर। चखकर देखा तो बड़ा तीखा निकला। मगर स्वाद में अहाहा। उसमें हरा धनिया पड़ा था। लहसुन, अजवाइन, अदरक, नमक। और खूब मिर्चे थीं हरी-हरी।

गुजरात, महाराष्ट्र और मुम्बई से नीचे कोंकण पट्टी में जाड़ों में उकड़हाण्डू बड़े शौक से बनाया और खाया जाता है।

देवजी ने वह मसाला कटे हुए प्याज़ और बैंगनों में भर दिया। बाकी सारी कटी हुई चीज़ों को मसाला चुपड़कर मिट्टी की एक हाण्डी में भर दिया। बारिश में झोपड़ी के आसपास गुराड़ा नाम की खरपतवार उग आई थी। उसे ठूँसकर हाण्डी का मुँह बन्द कर दिया। फिर इस हाण्डी को जलते हुए कचरे के ढेर में उलटकर रख दिया। ज़रा-सी हवा करने पर सूखे पत्ते, नारियल के छिलके और पत्तों के डण्ठल चट-चटकर तेज़ी-से जलने लगे। खासी आँच पैदा होने लगी। मगसीर (मार्गशीर्ष) के दिन ढले झुटपुटे की ठण्डक में यह आँच भली लग रही थी।

देवजी और जानकी वारली बोली में कुछ नुक्ताचीनी करने लगे। बीच-बीच में जानकी कुछ गाने लगती। वैसे पतली-ऊँची आवाज़ में उसका लहज़े में बोलना भी वनवासी गीत जैसा ही था। पौने घण्टे बाद देवजी ने राख के ढेर में से हाण्डी बाहर निकाली। मुँह से घास में दबाई दो फलियाँ मुझे चबाने के लिए दीं। मैंने हाँ में सिर हिलाया। अच्छी पकी हुई थीं। इसका अर्थ था कि भीतर का माल भी पक गया है। भाप निकलता और गज़ब की खुशबू बिखेरता वह मलीदा सबसे पहले मुझे एक तश्तरी में पेश किया गया। यह उबाड़ियू था।

मुझे इसका दूसरा नाम अधिक भाया – उकड़हाण्डू। यानी हाण्डी में उकड़ा (पकाया) हुआ कुछ। जो भी हो, यह लगता इतना ज़ायकेदार है कि मत पूछो! गर्मागर्म उकड़हाण्डू मुँह में भर लेने के बाद आप वैसे भी कुछ बोल नहीं पाएँगे।

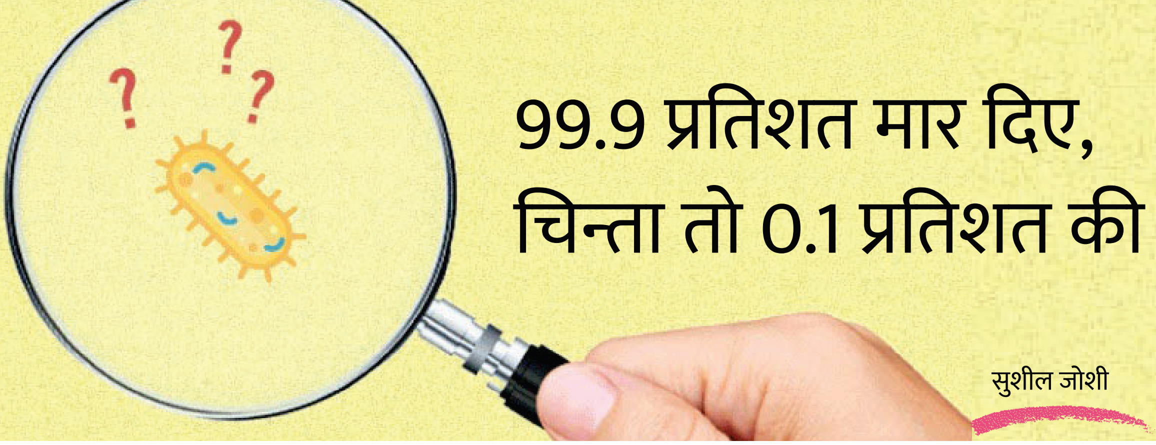

99.9 प्रतिशत मार दिए, चिन्ता तो 0.1 प्रतिशत की है

सुशील जोशी

आजकल साबुन, हैंड सेनिटाइज़र्स, कपड़े धोने के डिटर्जेंट, बाथरूम-टॉयलेट साफ करने के एसिड्स, फर्श साफ करने, बरतन साफ करने, सब्ज़ियाँ धोने के उत्पादों वगैरह सबके विज्ञापनों में एक महत्वपूर्ण बात जुड़ गई है। वह बात यह है कि ये उत्पाद 99.9 प्रतिशत जर्म्स को मारते हैं। मज़ेदार बात यह है कि सारे उत्पाद जादुई ढंग से 99.9 प्रतिशत जर्म्स को ही मारते हैं। और तो और, ये विज्ञापन तुम्हें यह भी सूचित करते हैं कि ये कोरोनावायरस को भी मार देते हैं।

मेरा ख्याल है कि काफी लोग बहुत खुश होंगे कि चलो, अब जर्म्स से छुटकारा मिलेगा और खुशी-खुशी इनमें से कोई उत्पाद खरीद लेंगे। विज्ञापनों का मकसद इसी के साथ पूरा हो जाता है। दरअसल, ऐसे विज्ञापनों के दो मकसद होते हैं – पहला प्रत्यक्ष मकसद होता है उस उत्पाद विशेष की बिक्री को बढ़ाना। लेकिन दूसरा मकसद भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है – उस श्रेणी के उत्पादों की ज़रूरत की महत्ता को स्थापित करना। जैसे, गोरेपन की क्रीम के विज्ञापन उस क्रीम विशेष की बिक्री को बढ़ाने की कोशिश तो करते ही हैं, गोरेपन को एक वांछनीय गुण के रूप में भी स्थापित करते हैं। तो जर्म-नाशी उत्पादों के विज्ञापन जर्म-नाश के महत्व को प्रतिपादित करते हैं।

हम इन जर्म-नाशी उत्पादों के 99.9 प्रतिशत के दावों पर सन्देह नहीं करेंगे, हालाँकि यह अपने आप में एक मुद्दा है। पर मेरी चिन्ता तो उन बचे हुए 0.1 प्रतिशत जर्म्स की है जिन्हें ये उत्पाद इकबालिया रूप से नहीं मार पाते। यहाँ एक बात स्पष्ट कर देना ज़रूरी है। कोरोनावायरस समेत सारे वायरस निर्जीव कण होते हैं, इसलिए मारने की बात ही बेमानी है। मरे हुए को क्या मारेंगे? लेकिन मान लेते हैं कि ये उत्पाद 99.9 प्रतिशत कोरोनावायरस को भी मार डालेंगे और 0.1 प्रतिशत को बख्श देंगे। सवाल है कि ये 0.1 प्रतिशत क्या करेंगे। इन 0.1 प्रतिशत का हश्र देखने के लिए हमें थोड़ा इतिहास में लौटना होगा।

एलेक्ज़ेंडर फ्लेमिंग ने पेनिसिलीन नामक एंटीबायोटिक औषधि की खोज 1928 में की थी और 1941 में इसका उपयोग एक दवा के रूप में शुरू हुआ। 1942 में पहला पेनिसिलीन-प्रतिरोधी बैक्टीरिया खबरों में आ चुका था। डीडीटी से तो काफी लोग परिचित हैं। यह भी सभी जानते हैं कि मलेरिया मच्छर के काटने से फैलता है। मलेरिया पर नियंत्रण की एक प्रमुख रणनीति यह थी कि मच्छरों का सफाया कर दिया जाए। डीडीटी के छिड़काव से मच्छर तेज़ी-से मरते थे। लेकिन कुछ ही वर्षों में स्पष्ट हो गया कि डीडीटी मच्छरों को मारने में असमर्थ हो गया है। मच्छरों में डीडीटी के खिलाफ प्रतिरोध पैदा हो गया था।

प्रतिरोधी जीवों का यह मसला आज एक महत्वपूर्ण समस्या है। चाहे जर्म्स हों, फसलों को नुकसान पहुँचाने वाले कीट हों, रोगवाहक मच्छर हों, हर तरफ प्रतिरोधी जीव नज़र आ रहे हैं। सवाल है कि प्रतिरोध पैदा कैसे होता है।

एंटीबायोटिक प्रतिरोध का कारण क्या है? बैक्टीरिया का जीवन चक्र और प्रत्येक पीढ़ी का समय मिनटों और घण्टों में होता है। और जब इस तरह की बैक्टीरिया कॉलोनी को एंटीबायोटिक दवा से उपचारित किया जाता है तो कॉलोनी का सफाया (99.9 प्रतिशत!) हो जाता है। लेकिन कॉलोनी में कभी-कभी संयोगवश म्यूटेशन उत्पन्न हो जाता है या उनमें एकाध बैक्टीरिया ऐसा होता है (0.1 प्रतिशत) जो उस एंटीबायोटिक से अप्रभावित रहता है। 99.9 प्रतिशत तो मर गए लेकिन वे 0.1 प्रतिशत संख्या वृद्धि करते रहते हैं, बल्कि प्रतिस्पर्धा के अभाव में और तेज़ी-से संख्या वृद्धि करते हैं। इसकी वजह से ऐसी सन्तति पैदा होती है जो एंटीबायोटिक की प्रतिरोधी होती है।

धीरे-धीरे दवा-प्रतिरोधी गुण वाले बैक्टीरिया तेज़ी-से वृद्धि करके कॉलोनी पर हावी हो जाते हैं। यह एंटीबायोटिक-प्रतिरोधी किस्म है। उसी एंटीबायोटिक से इन्हें मारने की कोशिश में सफलता कम या नहीं मिलेगी। इस प्रक्रिया के चलते हमारे द्वारा खोजे गए कई एंटीबायोटिक निष्प्रभावी हो चुके हैं। एंटीबायोटिक-प्रतिरोध की समस्या को स्वास्थ्य जगत में अत्यन्त महत्वपूर्ण समस्या माना गया है।

यही हाल डीडीटी का भी हुआ था और विभिन्न कीटनाशकों (पेस्टिसाइड्स) का भी। और अब हम घर-घर पर, सतह-सतह पर यही प्रयोग दोहराने को तत्पर हैं। सोचने वाली बात यह है कि यदि एक साथ इतने सारे जर्म-नाशी निष्प्रभावी हो गए तो क्या होगा।

स्रोत फीचर्स से साभार

अन्तर ढूँढ़ो

चित्र: दिलीप चिंचालकर

माथापच्ची

1. सैंटा की लाल टोपी कहीं खो गई है। क्या तुम ढूँढ़ दोगे?

2.

एक घर में 5 बहनें हैं। ऐन एक किताब पढ़ रही है, जेनी खाना बना रही है, मैरी शतरंज खेल रही है, अलीशा कपड़े धो रही है। बताओ पाँचवीं बहन क्या कर रही होगी?

3.

एक बरनी में सन्तरे की स्वाद वाली 5, इमली के स्वाद वाली 3 और आम के स्वाद वाली 2 कैंडी हैं। तुम चाहते हो कि तुम्हें हर स्वाद की कम से कम एक कैंडी ज़रूर मिले। इसके लिए तुम्हें बिना देखे बरनी से कम से कम कितनी कैंडी निकालनी होंगी?

4. नीचे संख्याओं के कुछ ब्लॉक्स दिए हैं। हरेक ढेर की संख्याओं का जोड़ अलग-अलग है। तुम्हें हरेक ढेर में से केवल एक ब्लॉक को इधर-उधर करके तीनों ढेरों की संख्याओं का जोड़ समान लाना है। कैसे करोगे?

4	5	2
5	5	10
7	3	6
9	3	8
1	1	3

5. इस चित्र को 7 बराबर भागों में कैसे बाँट सकते हैं?

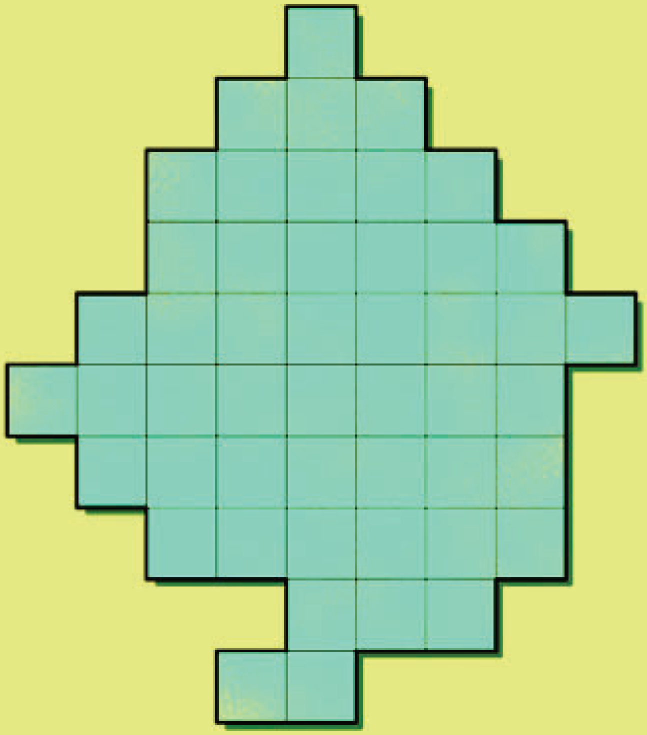

6. एक बहुमंज़िली इमारत के सामने एक व्यक्ति की लाश पड़ी थी। पहली नज़र में देखने पर यह आत्महत्या का मामला लग रहा था। इंस्पेक्टर ने पहले माले पर जाकर खिड़की खोलकर अपनी टीम को देखा। फिर उन्होंने हर माले पर जाकर यही किया। फिर लिफ्ट से नीचे आकर अपनी टीम से कहा कि इसकी हत्या हुई है। इंस्पेक्टर ने ऐसा अन्दाज़ा क्यों लगाया। क्या तुम्हें कोई सुराग मिला?

7. ज़ोया एक होटल में ठहरी थी। रात का समय था। तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई। ज़ोया ने दरवाज़ा खोला तो एक अजनबी बाहर खड़ा था। वह बोला, "माफ कीजिएगा। मुझे लगा यह मेरा कमरा है।" उसके जाते ही ज़ोया ने तुरन्त रिसेप्शन में फोन किया और उस व्यक्ति को पकड़ने के लिए कहा। उसने ऐसा क्यों किया? होगा?

फटाफट बताओ

क्या है जो पोंछने से
गीला हो जाता है?

(तौलिया)

कोई व्यक्ति 10 दिन बिना
सोए कैसे रह सकता है?

(रात में सोकर)

दो किसान लड़ते जाएँ,
उनकी खेती बढ़ती जाए

(दर्जी की कैंची)

अगर तुम्हारे पास दो
गाय और चार बकरियाँ
हैं, तो तुम्हारे पास कुल
कितने पैर हैं?

([illegible])

वो क्या है जिसे उपयोग
करना हो तो फेंक देते
हैं, लेकिन जब उपयोग
नहीं करना हो तो वापस
ले लेते हैं?

(मछली पकड़ने का जाल)

क्या है जो पानी से भरा है
लेकिन फिर भी किसी की
प्यास नहीं बुझा सकता?

(समुद्र)

	9	4			1	6		3
		2	9	6	4	7		5
1	7	6	3	8	5			9
2	4				9	5	6	
7		5	4		6	9	2	8
	6	8	5			3		4
6	3			9				
			6			1		2
4		9			7	8		6

सुडोकू-37

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

1 2 3 4
5 6
7 8 9 10
11
12 13 14
15 16 17
18 19 20 21
22 23
24 25 26
27 28
19 25 20 16 9 24 6 16 26 15 23 4 11 3 7 2 9 2 24 1 10 1 15 28

माथापच्ची जवाब

2. पाँचवीं बहन मैरी के साथ शतरंज खेल रही होगी।

3. 9 कैंडी निकालोगे तो हर स्वाद की एक ना एक कैंडी ज़रूर होगी।

1.

4. तीसरे ढेर से संख्या 10 वाले ब्लॉक को बीच वाले ढेर में ले आओ। बीच वाले ढेर से संख्या 3 वाले एक ब्लॉक को पहले ढेर में ले जाओ और पहले ढेर से संख्या 5 वाले ब्लॉक को ढेर 3 में ले जाओ। ऐसा करने से सभी ढेरों में संख्याओं का जोड़ 24 होगा।

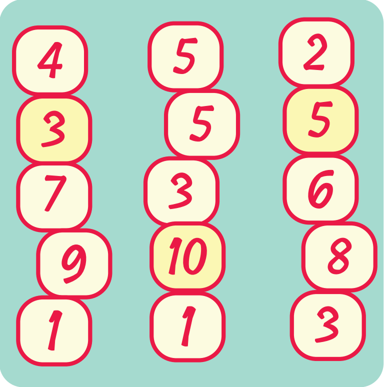

5.

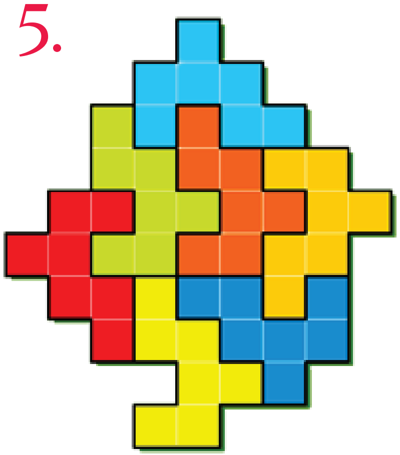

6. इंस्पेक्टर ने हरेक माले पर जाकर खिड़की खोली थी। इससे वो समझ गए कि उसे मारा गया है क्योंकि यदि उस व्यक्ति ने आत्महत्या की होती तो वह खिड़की बन्द नहीं कर सकता था।

7. क्योंकि उस आदमी ने झूठ बोला था। अगर उसने उसे अपना कमरा समझा होता तो उसके पास उसकी चाबी होती। उसे दरवाज़ा खटखटाने की ज़रूरत नहीं पड़ती।

नवम्बर की चित्रपहेली का जवाब

1अ	टै	2 ची		3 प		4 कु	ली		5 बो
		त		6 ग	ट्ठ	र			त
	7 रै	ल	8 गा	ड़ी		9 सी	ता	10 फ	ल
11पं	खा		ई					की	
छी					12 त	13 स	वी	र	
	14 टि	क	15 ट			फे			16 शी
	फि		17 ब	र	18 ग	द			त
19 ऐ	न	20 क			म			21 न	ल
		च			22 छा	23 ता		का	
	24कू	ड़ा	दा	न		25 ला	ल	ब	ती

सुडोकू-36 का जवाब

9	8	4	1	3	7	5	6	2
2	7	3	6	5	9	1	8	4
6	5	1	2	8	4	7	3	9
4	1	5	3	7	6	9	2	8
8	2	6	5	9	1	4	7	3
3	9	7	8	4	2	6	1	5
5	4	2	7	6	3	8	9	1
1	6	8	9	2	5	3	4	7
7	3	9	4	1	8	2	5	6

ग्रे स्लैन्डर लोरिस

रोहन चक्रवर्ती

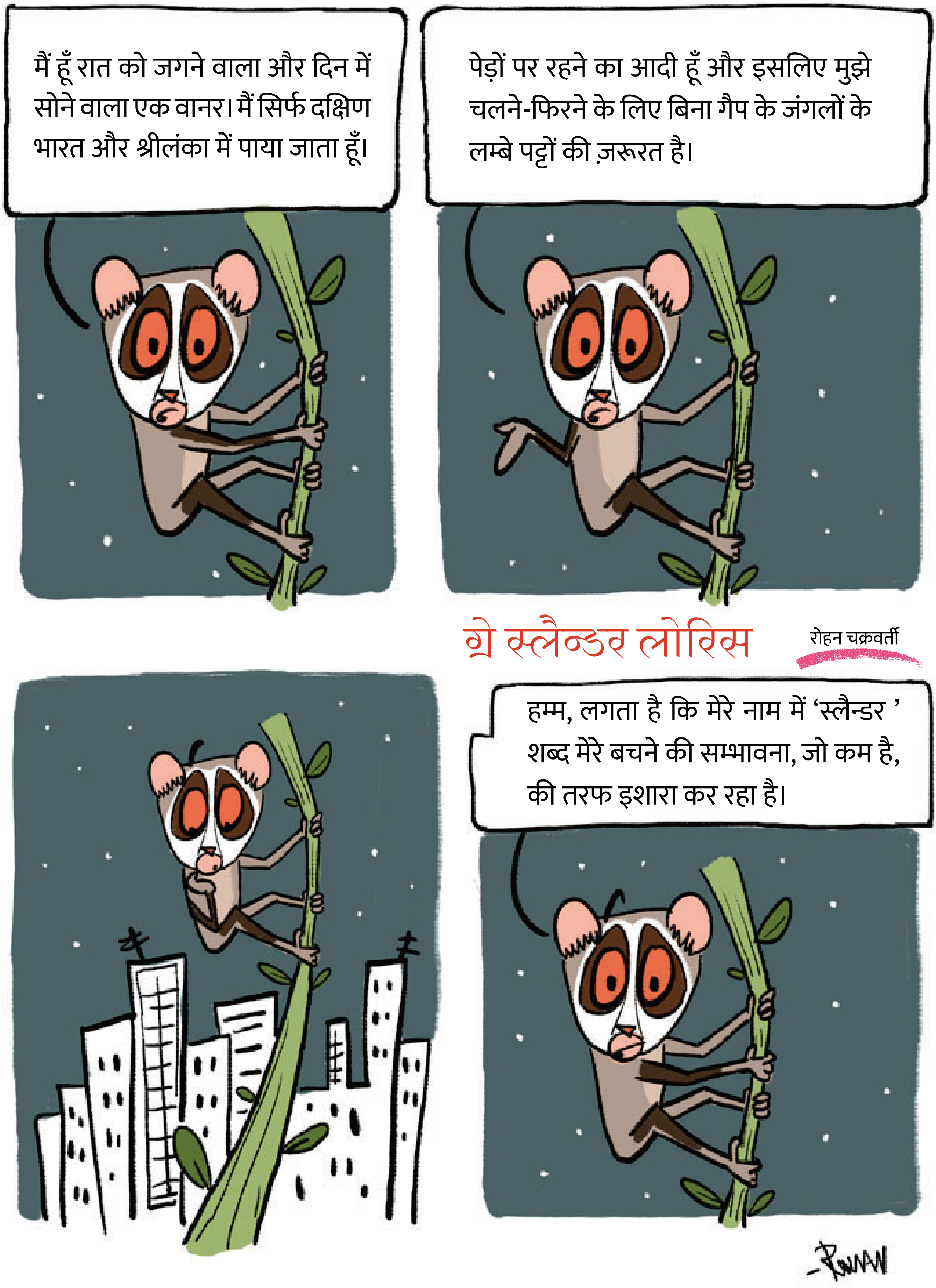

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20

चित्र: अनाहिता, सात वर्ष, स्टुडिया रनिंग स्टिच, बेंगलूरु, कर्नाटका

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन